सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

वर्ष 01, अंक 286, नई दिल्ली | मंगलवार, 26 दिसम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

आज का सुविचार

"सफलता की ख़ुशी मनाना अच्छा है पर, उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना !

सभी टोल प्लाजा में अब एंबुलेंस तैनात करने की तैयारी

एनएच पर अभी पूरे देश में केवल 300 एंबुलेंस उपलब्ध

संजय बाटला, सम्पादक

एनएचएआइ देश के सभी टोल प्लाजा में एंबुलेंस उपलब्ध कराने की योजना पर काम कर रहा है ।सड़क परिवहन मंत्रालय ने यह जानकारी संसद की स्थायी समिति को सड़क सुरक्षा के मसले पर दी है ।समिति की यह टिप्पणी इस लिहाज से अहम हैक्योंकि मंत्रालय ने उसे सूचित किया है कि इस समय राष्ट्रीय राजमार्गों पर केवल तीन सौ एंबुलेंस उपलब्ध हैं। एंबुलेंसों खरीद के लिए निविदा प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

नईदिल्ली। एनएचएआइ देश के सभी टोल प्लाजा में एंबुलेंस उपलब्ध कराने की योजना पर काम कर रहा है। इस सिलसिले में एंबुलेंसों की खरीद के लिए निविदा प्रक्रिया अंतिम चरण में है। सड़क परिवहन मंत्रालय ने यह जानकारी संसद की स्थायी समिति को सड़क सुरक्षा के मसले पर दी है।

समिति की हाल में संसद में पेश की गई रिपोर्ट के मुताबिक सड़क परिवहन मंत्रालय को पूरे देश में हाईवे नेटवर्क में दुर्घटना के शिकार लोगों को तत्काल इलाज की सुविधा प्रदान करने के लिए एंबुलेंस कीक जरूरत का आकलन करना चाहिए। एंबुलेंस की कमी को दूर करने के लिए संबंधित एजेंसियों के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है।

राजमार्गों पर केवल तीन सौ एंबुलेंस उपलब्ध

समिति की यह टिप्पणी इस लिहाज से अहम है, क्योंकि मंत्रालय ने उसे सूचित किया है कि इस समय राष्ट्रीय राजमार्गों पर केवल तीन सौ एंबुलेंस उपलब्ध हैं। यह कमी गोल्डल आवर यानी दुर्घटना के बाद पहले घंटे में हादसे के शिकार लोगों को चिकित्सकीय मदद उपलब्ध कराने में बड़ी अड़चन है।

समिति ने कहा है कि एंबुलेंस की तैनाती न केवल राष्ट्रीय राजमार्गों पर निश्चित अंतराल में बल्कि दुर्घटना बहुल और खासकर ब्लैक स्पाट के रूप में चिह्नित

किए गए स्थानों पर अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए। मंत्रालय ने समिति को आश्वासन दिया है कि उसकी सिफारिश और सुझाव नोट कर लिए गए हैं। मंत्रालय ने यह भरोसा भी दिलाया है कि नई एंबुलेंस की खरीद की प्रक्रिया तेज की जाएगी। मं

चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराना सबसे अहम

देश में केवल राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई डेढ़ लाख किलोमीटर से अधिक हो चुकी है और सड़क हादसों की जितनी गंभीर स्थिति है, उसे देखते हुए दुर्घटना के शिकार लोगों को तत्काल चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराना सबसे अहम है। समिति ने मंत्रालय और एनएचएआइ से यह भी कहा है कि वह एंबुलेंस की सेवा के संदर्भ में लोगों को अलग-अलग माध्यमों से सूचना भी उपलब्ध कराए।

सीएम घोषणा के तहत 4.28 करोड़ से बने दो बस स्टैंड को उद्घाटन का इंतजार

चरखी दादरी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल की घोषणा के तहत कादमा और झोझूकलां में 4.28 करोड़ रुपये खर्च कर बनाए गए बस स्टैंड का अब तक उद्घाटन नहीं हुआ है। इसका कारण परिवहन विभाग और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों का गड़बड़ाया तालमेल है। परिवहन विभाग का तर्क है कि नवनिर्मित बस स्टैंड में काई खामियां हैं और इनके दूर होने तक विभाग इन्हें अपने अधीन नहीं ले सकता।

वहीं, पीडब्ल्यूडी अधिकारियों ने खामियों से इन्कार करते हुए बस स्टैंड उद्घाटन में हो रही देरी के लिए परिवहन विभाग के अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया है। दरअसल, ग्रामीण क्षेत्रों की बस सेवा को बेहतर करने के लिए जनप्रतिनिधि व क्षेत्रवासियों की मांग पर सरकार ने झोझूकलां और कादमा में बस स्टैंड बनाया है। कादमा बस स्टैंड निर्माण पर करीब 2.90 करोड़ तो झोझूकलां बस स्टैंड निर्माण पर 1.38 करोड़ रुपये की लागत आई है। अहम बात ये है कि बस स्टैंड बने एक साल से अधिक समय हो चुका है, लेकिन अब तक इनका उद्घाटन नहीं हो पाया है। फिलहाल यहां से कुछ बसों का संचालन तो किया जा रहा है, लेकिन यात्रियों के लिए सुविधाएं बस स्टैंड की तर्ज पर नहीं हैं।

परिवहन और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों का तालमेल बिगड़ा हुआ है और ये ही कारण है कि बस स्टैंड परिवहन विभाग को सुपुर्द करने की प्रक्रिया अब तक पूरी नहीं हो पाई। रोडवेज डिपो संस्थान प्रबंधक दीपक कुमार का कहना है कि दोनों बस स्टैंड में काफी खामियां हैं और जब तक ये दूर नहीं होंगी तब तक विभाग भवनों को अपने अधीन नहीं ले सकता। वहीं, पीडब्ल्यूडी एसडीओ अश्वनी भारद्वाज का कहना है कि झोझूकलां बस स्टैंड परिवहन विभाग अपने अधीन ले चुका है जबकि कादमा बस स्टैंड की जो खामियां बताई गई थीं, उन्हें दूर करवाकर विभागीय अधिकारियों का निरीक्षण करवाया जा चुका है। इसके बावजूद परिवहन विभाग इसे अपने अधीन नहीं ले रहा।

- हर निरीक्षण के दौरान सामने आई खामी

परिवहन विभाग के अधिकारियों की मानें तो मुख्यालय की ओर से गठित की गई कमेटी ने भवनों का तीन बार निरीक्षण किया। हर निरीक्षण में खामियां मिलीं और इसके चलते 25 आपत्तियों की सूची पीडब्ल्यूडी को भेजी गई। एक साल बीतने के बाद भी महज 16 आपत्तियों को ही दूर किया जा चुका है। अधिकारियों का कहना है कि आपत्तियां दूर करने के लिए तीन बार पीडब्ल्यूडी को पत्र लिख चुके हैं।

तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकराई, हादसे में एक की मौत; दो घायल

परिवहन विशेष न्यूज

सेक्टर-126 मयूर गोल चक्कर के पास सोमवार तड़के एक तेज रफ्तार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराने के बाद शौचालय की दीवार से टकराई गई। हादसे में कार में सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची सेक्टर-126 कोतवाली पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए पास के एक अस्पताल में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान डाक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया।

नोएडा। सेक्टर-126 मयूर गोल चक्कर के पास सोमवार तड़के एक तेज रफ्तार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराने के बाद शौचालय की दीवार से टकराई गई। हादसे में कार में सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

सूचना पर पहुंची सेक्टर-126 कोतवाली पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए पास के एक अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान डाक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया। वहीं, दो अन्य घायलों का इलाज जारी है।

कोतवाली पुलिस का कहना है कि सोमवार तड़के करीब तीन बजे सेक्टर-126 मयूर गोल चक्कर के पास एक कार तेज गति के कारण डिवाडर से टकरा गई। हादसे में लखनऊ के तुषार चौधरी की मृत्यु हो गई। आगरा का शुभम व लखनऊ की सागोरिका मित्रा घायल हो गए।

जेपी अस्पताल में भर्ती घायल

घायलों का सेक्टर-128 स्थित जेपी अस्पताल में उपचार चल रहा है। पुलिस ने हादसे में मारे गए युवक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। जांच में आया है कि दिल्ली के करोल बाग में श्री राम फाइनेंस कंपनी के लोन विभाग में नौकरी करता था।

शुभम ग्रेटर नोएडा की स्केलर कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है, जबकि सगोरिया मित्रा नौकरी की तलाश कर रही है। पुलिस ने घटना के संबंध में मृतक के स्वजन को सूचित कर दिया है। घटना के बाद से मृतक के परिवार में मातम छाया है।

जानकारी पर पता चला है कि तीनों ग्रेटर नोएडा से कार में सवार होकर दिल्ली में खाना खाने के लिए जा रहे थे। इसी दौरान हादसा हो गया।

इनोवा की चपेट में आकर मासूम घायल

सेक्टर-59 मेट्रो स्टेशन के पास एक दो साल का बच्चा इनोवा की चपेट में आकर घायल हो गया। सेक्टर-58 कोतवाली का कहना कि मेट्रो स्टेशन के पास एक बच्चा इनोवा कार जो कि सेक्टर-74 से दिल्ली की ओर जा रही थी उसकी चपेट में आ गया। जिसे इनोवा चालक द्वारा सेक्टर-71 स्थित कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस द्वारा मौके पर पहुंच कर कार के चालक को हिरासत एवं वाहन को कब्जे में लिया गया है। बच्चे का उपचार चल रहा है। आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

हादसे में घायल कांस्टेबल की उपचार के दौरान मौत

सेक्टर-27 स्थित कैलाश अस्पताल में सड़क हादसे में घायल कांस्टेबल की उपचार के दौरान मौत हो गई। सेक्टर-20 कोतवाली पुलिस का कहना है कि आरक्षी सत्येंद्र (29) मथुरा की बस में सवार होक र जा रहे थे। आगरा जिल में एक ट्रक की बस से टक्कर हो गई। इस घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए। उपचार के लिए उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई।

वंदे भारत ट्रेन के बाद अब अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

भारतीय रेल ने अपनी पुरानी परिपाटी में छुल-छुक रेल की जगह आधुनिक सुख- सुविधाओं से लैस सेमी हाई स्पीड वंदे भारत ट्रेन ने ले ली है। और यात्रियों ने भी इस नए रूप को काफी सराहा भी है। इन एक्सप्रेस ट्रेन के मंहगे किराए ने गरीब-गुरबत लोगों के लिए सफर मुश्किल बना दिया है। लेकिन मोदी सरकार ने देश की आम जनता की इसी जरूरतों के मद्देनजर ही भारतीय रेलवे एक नयी पहल करने जा रही है, सरकार वंदे भारत के बाद अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की शुरूआत करने जा रही है।अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन की शुरूआत भी बिहार से होने जा रही है। इस बात से बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश तक फैले पूर्व मध्य रेल के हाजी पुर मुख्यालय में इस ट्रेन के मिलने का जोश हाई दिखाई दे रहा है। हाजी पुर रेल मुख्यालय ने इस ट्रेन के स्वागत की तैयारियां शुरू कर दी है।

उल्लेखनीय है कि अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन 22 बोगियो वाली ट्रेन में एसी कोच की बजाए सभी कोच स्लीपर और जनरल कोच रखे गए है। लेकिन सुविधाए वंदे भारत जैसी ही आधुनिक है। सीसीटीवी कैमरो से लैस ट्रेन की बोगियां, अत्याधुनिक शौचालय, बोगियों में सेंसर वाले वाटर टेप, के साथ गार्ड और मैट्रो की तर्ज पर अनाउंसमैंट सिस्टम के इंतजाम

इस नई ट्रेन में होगे। सेमी हाई स्पीड अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन का किराया लेबर क्लास के मद्देनजर सामान्य ट्रेनों से कम रखने का प्लान है। इस खास ट्रेन को पीएम मोदी हरी झंडी दिखाकर शुरूआत करेंगे।देश की पहली अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन की शुरूआत माता-सीता के जन्मस्थली से श्री राम के जन्मस्थल को जोडेगी।इस ट्रेन की शुरूआत की तारीख उस दिन को रखा गया है जब पीएम नरेंद्र मोदी अयोध्या में राम लला के दर्शन के लिए जाएगें। 30 दिसंबर को पीएम मोदी अयोध्या में होगे, और उसी दिन देश की पहली अमृत भारत ट्रेन की शुरूआत होगी। जो दरभंगा से अयोध्या होते हुए दिल्ली तक जाएगी।अयोध्या में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 5 नई वंदे भारत एक्सप्रेस के अलावा 2 अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाएगें। अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन मालदा से बेंगलूरू जाएगी। आगे पीछे दो अलग-अलग इंजन वाली इस ट्रेन की रफ्तार शताब्दी ट्रेनों को टक्कर देते हुए 130 किलोमीटर प्रति घंटा की होगी।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/ 25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए-4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

देश में हो रहे प्रदूषण को लेकर चिंतित गर्भवती महिलाएं व आने वाले शिशु

इस महीने की शुरुआत से ही दिल्ली-एनसीआर समेत कई इलाकों में प्रदूषण का लेवल बढ़ रहा है. ऐसे में डॉक्टरों ने अलर्ट किया है. डॉक्टरों का कहना है कि अभी से लोगों को वायु प्रदूषण से बचाव करना होगा. इसके लिए डॉक्टरों ने कुछ टिप्स साझा किए हैं.

मौसम में परिवर्तन और ठंड शुरू होने के साथ ही दिल्ली और एनसीआर समेत कई इलाकों में वायु प्रदूषण के स्तर में इजाफा होने लगा है. बढ़ते खतरे को देखते हुए दिल्ली-एनसीआर में ग्रैप का पहला चरण भी शुरू करने का आदेश दिया गया है. प्रदूषण की वजह से सेहत पर भी गंभीर असर होता है. इससे लंग्स इंफेक्शन, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारी हो जाती है. प्रदूषण का सबसे ज्यादा खतरा गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों को होता है. डॉक्टरों का कहना है कि प्रेग्नेंट महिलाओं को अभी से उनकी सेहत का ध्यान रखना होगा. ऐसा इसलिए क्योंकि आने वाले दिनों में प्रदूषण का लेवल बढ़ेगा. अगर अभी से सावधानी बरती तो भविष्य में गंभीर खतरे से बचाव हो सकता है.

गुरुग्राम के मैक्स हॉस्पिटल्स में एसोसिएट डायरेक्टर (ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी) और औरा स्पेशलिटी क्लीनिक की डायरेक्टर डॉ. रितु सेठी बताती हैं कि वायु प्रदूषण के बढ़ने की वजह से लोगों को कई तरह की परेशानियां होती हैं. जिन लोगों को पहले से ही सांस संबंधित बीमारियां हैं उनको अधिक खतरा रहता है. खासतौर पर गर्भवती महिलाओं और बच्चों को बढ़ते प्रदूषण के कारण ज्यादा परेशानी होती है, हालांकि अभी प्रदूषण अधिक नहीं है, लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा. ऐसे में अभी से बचाव करना जरूरी है. प्रदूषण से बचाव नहीं किया तो गर्भवती महिला को कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं.

ऐसे कौन 21 रूल है जो हमें पता होना जरूरी है? जानें

कंगारू केयर नवजात बच्चों की देखभाल का एक तरीका है, जो समय से पहले जन्मे नवजात शिशुओं के लिए बेहद फायदेमंद हो सकता है. इसका ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है और डॉक्टर भी इस तरीके को असरदार मानते हैं. आज आपको बताएंगे कि कंगारू केयर क्या है और इसके क्या फायदे होते हैं.

'21 रूल' विभिन्न सामाजिक, व्यावसायिक, और व्यक्तिगत स्तरों पर हो सकते हैं, और इस संदर्भ में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा व्यक्त किए गए रूल्स हो सकते हैं। यहां कुछ आम रूल्स हैं जो व्यक्ति के विकास में सहायक हो सकते हैं:

1. ***समय का प्रबंधन करें:*** समय को सही तरीके से प्रबंधित करना महत्वपूर्ण है।

2. ***स्वस्थ जीवनशैली:*** सही आहार, नियमित व्यायाम, और पर्याप्त आराम से स्वस्थ जीवनशैली को बनाए रखना चाहिए।

3. *सकारात्मक सोच:* सकारात्मक सोच बनाए रखना और अपनी मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

4. *धैर्य रखें:* धैर्य रखना और कभी-कभी बातचीत करना महत्वपूर्ण है।

5. ***नैतिकता में बरतावः*** सही और नैतिकता से भरा व्यवहार करना चाहिए।

6. ***सीखने की भावनाः*** हमेशा सीखने के लिए खुले रहना चाहिए।

7. ***सामाजिक संबंध बनाए रखेंः*** सही संबंध बनाए रखना और अपने पासवर्ड को बचाना महत्वपूर्ण है।

8. ***सजग रहें:*** चेतना में रहकर जीवन को सजगता से जीना चाहिए।

9. ***स्वाभाविक हों:*** अपने स्वाभाव को स्वीकार करना और बेहतरीन स्वरूप में सुधार करना चाहिए।

10. ***सच्चाई और ईमानदारी:*** हमेशा सच्चाई बोलना और ईमानदारी से कार्य करना चाहिए।

11. ***कभी हार नहीं माननाः*** अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हार नहीं मानना चाहिए।

12. ***बचपन में रहकर हंसें:*** बचपन की खुशियों को याद करके हंसना चाहिए।

13. *सही दोस्त चुनें:* उच्च-मूल्य दोस्तों को चुनना चाहिए।

14. ***स्वतंत्र महसूस करें:*** स्वतंत्रता महसूस करना और दूसरों को भी उसे महसूस करने का अधिकार देना चाहिए।

15. ***संतुलित जीवनशैली:*** संतुलित जीवनशैली को बनाए रखना चाहिए।

16. *स्वावलंबी बनें:* स्वावलंबी बनकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करना चाहिए।

17. ***विशेषज्ञता विकसित करें:*** अपनी रुचियों और क्षमताओं में माहिर होने के लिए कोशिश करें।

18. ***आत्म-समर्पणः*** अपने कार्यों में पूरा समर्पण और आत्म-निवृत्ति बनाए रखना चाहिए।

19. *स्वच्छता बनाए रखें:* व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर स्वच्छता बनाए रखना चाहिए।

20. ***आत्म-प्रबंधनः*** अपने विचारों और भावनाओं का प्रबंधन करना चाहिए।

21. ***सकारात्मक उत्तराधिकारी बनें:*** अपने कार्यों और निर्णयों के लिए सकारात्मक उत्तराधिकारी बनें।

ये सभी रूल विभिन्न स्रोतों से लिए गए हैं और व्यक्ति के विकास और अच्छे जीवन की दिशा में मदद कर सकते हैं।

दुनिया की कोई दवा 42 दिन से पहले कोलेस्ट्रॉल नहीं कर सकती कंट्रोल ! खाने-पीने से इतने महीने में दिखेगा असर

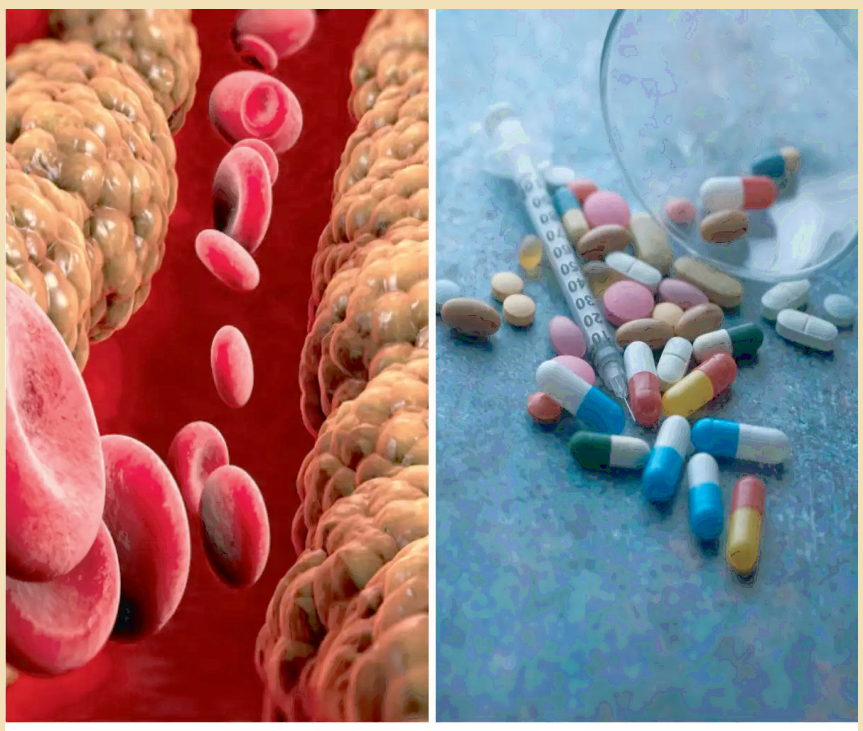

तमाम लोगों को लगता है कि शरीर में जमे कोलेस्ट्रॉल को आसानी से बाहर निकाला जा सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है . प्रॉपर ट्रीटमेंट के बाद भी बैड कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में कई सप्ताह का वक्त लग सकता है . कुछ लोगों के लिए यह समय सीमा कई महीने भी हो सकती है . इससे जुड़ी हैरान करने वाली बातें जान लीजिए .

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने की समस्या इन दिनों आम हो गई है. बड़ी तादाद में लोग हाई कोलेस्ट्रॉल का शिकार हो रहे हैं. कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाए, तो हमारी खून की धमनियों में जमा हो जाता है और ब्लड फ्लो को प्रभावित करता है. इससे हार्ट अटैक, स्ट्रोक समेत कई जानलेवा कंडीशन पैदा हो सकती हैं. ऐसे में इसे कंट्रोल करना बहुत जरूरी होता है. कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल करने के लिए अक्सर लोग दवाओं का सहारा लेते हैं, जबकि कुछ लोग दवा के साथ बेहतर लाइफस्टाइल और हेल्दी डाइट का सहारा भी लेते हैं. ये सभी चीजें कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल करने में अहम भूमिका निभाती हैं.

बाजार में बिकने वाले तमाम प्रोडक्ट दावा करते हैं कि कोलेस्ट्रॉल को 7 दिनों या 10 दिनों में पूरी तरह कंट्रोल किया जा सकता है. कई जड़ी-बूटियों से भी कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल करने का दावा किया जाता रहा है. अब सवाल है कि आखिर दवाओं के जरिए कोलेस्ट्रॉल को नॉर्मल स्तर पर लाने में कितने दिनों का वक्त लग सकता है. इसके अलावा बिना दवाओं के लाइफस्टाइल और हेल्दी डाइट से कोलेस्ट्रॉल को कितने दिनों में कंट्रोल किया जा सकता है. अधिकतर लोगों को लगता है कि कोलेस्ट्रॉल चुटकियों में कंट्रोल हो सकता है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है. सच जानकर आपके होश उड़ जाएंगे.

इतने वक्त में कोलेस्ट्रॉल होता है कंट्रोल

मेडिकल न्यूज़ टुडे की रिपोर्ट की मानें तो कई रिसर्च में यह बात सामने आ चुकी है कि कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने के लिए दी जाने वाली दवाओं से तुरंत असर नहीं दिखता है. ये दवाएं कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में करीब 6 सप्ताह यानी 42 दिनों का समय लेती हैं. जिन लोगों का कोलेस्ट्रॉल लेवल अत्यधिक होता है, उन मामलों में दवा लेने के बावजूद कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल होने में कई महीने का वक्त लग सकता है. सिर्फ लाइफस्टाइल और हेल्दी डाइट से कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने की कोशिश की जाए, तो इसमें 3 से 6 महीने तक का लंबा वक्त लग सकता है. कोलेस्ट्रॉल को लेकर लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए.

इस बारे में क्या कहते हैं डॉक्टर ?

नई दिल्ली के सर गंगाराम हॉस्पिटल के प्रिवेंटिव हेल्थ डिपार्टमेंट की डायरेक्टर डॉ. सोनिया रावत कहती हैं कि यह बात बिल्कुल सही है. कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में काफी वक्त लगता है और इसे दवाओं या किसी अन्य तरीके से तुरंत कंट्रोल नहीं किया जा सकता है. आमतौर पर लोगों की कंडीशन के अनुसार दवाएं दी जाती हैं और उन्हें बेहतर लाइफस्टाइल, डेली फिजिकल एक्टिविटी व बैलेंस्ड डाइट की सलाह दी जाती है. इन सभी बातों का ध्यान रखकर कोलेस्ट्रॉल को कुछ सप्ताह में कंट्रोल कर सकते हैं. हालांकि किसी को समस्या ज्यादा है, तब ऐसे मरीजों को कई महीनों का वक्त लग सकता है.

नाम जप का महत्व

कलयुग केवल नाम अधारा,
सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।

तुलसीदास रचित रामायण की इस चौपाई के अनुसार आज के युग में ऐसे क्या साधन उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा आसानी से आत्मज्ञान अर्थात मोक्ष पाया जा सकता है.. !

इस कलयुग में भगवान का नाम ही आधार है। केवल नाम सुनने से , जपने से मानव भव सागर से पार उतर जाता है।

नाम जप में किसी विधिविधान , देश , काल , अवस्था की कोई बाधा नहीं है। किसी प्रकार से , कैसी भी अवस्था में , किसी भी परिस्थिति में , कहीं भी , कैसे भी नाम जप किया जा सकता है। इस नाम जप से हर युग में भक्तों का भला हुआ।

शास्त्र कहते हैं कि कलियुग ने आने के लिए राजा परीक्षित से बहुत अनुनय-विनय की। कहा कि घबराइए नहीं महाराज , हम किसी को तंग नहीं करेंगे , बस ' स्वर्ण ' में घर बसाएंगे। हमारे साथ दो-चार संगी , साथी होंगे- राग , द्वेष , ईर्ष्या , काम-वासना आदि। अपने गुण बताते हुए कलियुग ने कहा- सुनो हमारी महिमा ! हमारे राज में जो प्रभु का ' केवल ' नाम ले लेगा , उसकी मुक्ति निश्चित है। और तो और , मन से सोचे गए पाप की हम सजा नहीं देंगे , पर मन से सोचे गए पुण्य का फल जरूर देंगे।

जा परीक्षित ने कलियुग को आने दिया तो सबसे पहले वह राजा के सोने के मुकुट में ही विराजमान हुआ और सबसे पहले उन्हें ही मृत्यु की ओर धकेल दिया।।

कलियुग को सभी कोसते हैं, सभी क्रोध , राग , द्वेष और वासना से ग्रस्त हैं। कोई कहता है काश , हम सतयुग में पैदा हुए होते। कोई त्रेता और द्वापर युग के गुण गाता है।

तुलसीदास ने जन-मानस की हालत देखकर समझाया कि कलियुग में बेशक बहुत सी गड़बड़ियाँ हैं , मगर उन सबसे बचने का उपाय जितनी सरलता से कलियुग में मिल सकता है, उतनी सरलता से किसी और काल में नहीं मिला।

पहले के युगों में प्रभु को पाने के लिए ध्यान, घोर तपस्या, बड़े-बड़े यज्ञ, अनुष्ठान करना पड़ता था। ये सभी मार्ग नितांत कठिन और घोर तपस्या के बाद ही फलीभूत होते हैं, पर कलियुग में ईश्वर को प्राप्त करना पहले के मुकाबले बड़ा ही सरल हो गया है ।केवल भगवान नाम जप प्रभु को पाया जा सकता है।

हर मत और संप्रदाय ने गुण गाया है ' नाम ' का। यह वह मार्ग है जहाँ विविध संप्रदाय एकमत हो जाते हैं। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास ने कहाः कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।। नाम जप में किसी विधिविधान , देश , काल , अवस्था की कोई बाधा नहीं है। किसी प्रकार से , कैसी भी अवस्था में , किसी भी परिस्थिति में , कहीं भी , कैसे भी नाम जप किया जा सकता है। इस नाम जप से हर युग में भक्तों का भला हुआ।

श्रीभद् भागवत में कथा आती है अजामिल ब्राह्माण की , जिसने सतयुग में घोर पाप किया। पत्नी के होते हुए वेश्या के पास रहा। वेश्या के पुत्र का नाम नारायण रख दिया। मरते समय पुत्र को पुकारा , ' नारायण ! ' तो स्वयं नारायण आ गए।

ऐसी ही एक और कथा है गज ग्राह युद्ध की। गज ने अपनी सूंड तक अपने को डूबते पाया तो पुकारा ' रा ! ' इतनी भी शक्ति नहीं थी कि पूरा ' राम ' कह दे। पर प्रभु ने भाव समझ लिया और गज के प्राण बचा लिए।

त्रेता में वाल्मीकि ने नाम जप किया तो उल्टा। ' राम ' कह न सके , डाकू थे , मांसाहारी थे , सो ' मरा ' कहना सरल लगा , तोते की तरह रटते रहे तो स्वयं श्री राम पधारे कुटिया में। ' उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीकि भए ब्रह्मा समाना।

द्वापर युग में द्रोपदी ने भरी सभा में रोते हुए हाथ खड़े कर दिए। सभी का सहारा छोड़ दिया तो कृष्ण की याद आई। श्रीकृष्ण चीर रूप में प्रकट हुए।

कलियुग में तो नाम जप के भक्तों की भरमार है। कबीर , मीरा , रैदास , तुलसीदास , रहीम , रसखान , नानक , रामकृष्ण परमहंस , रमण महर्षि आदि।

राजा परीक्षित के वैद्य धन्वन्तरि तो कहते थे कि ' नाम जप ' औषधि है , जिससे सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। इस औषधि का लाभ अनेक संतों ने उठाया है। हर अवस्था में , चिंता में , रोग में उन्होंने ' राम नाम ' का आश्रय लिया।

लेकिन नाम जप का यह अर्थ नहीं कि पाप करने की छूट मिल गई।

नाम से पापों का विनाश होता तो है , पर तभी जब व्यक्ति के हृदय में पिछले पापों के प्रति प्रायश्चित और उन्हें दोबारा न करने का संकल्प हो।

नाम जप की औषधि के साथ परहेज भी आवश्यक है। नाम जपते रहो , क्रोध स्वतः दूर हो जाएगा। जप में बुरी प्रवृत्तियां पीछे हटती जाती हैं। उन्हें जबरन हटाने का प्रयास न करो, बस नाम जपो , प्रेम से। नाम जप माया रूपी संसार से उबरने का अमोघ मंत्र है। किन्तु इसके लिए हृदय का योग भी होना चाहिए।

ईश्वर को पुकारने के लिए जब दिल से आवाज उठती है , तभी उस तक पहुंचती है। अतः आइए हम सब पूर्ण भाव से ईश्वर के पवित्र नामों जप करें।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

दिल्ली में अवैध कॉलोनियों को नियमित करने पर आया बड़ा अपडेट, एलजी ने समयबद्ध योजना बनाने का दिया निर्देश

एलजी ने अनधिकृत कालोनियों के नियमितीकरण और झुग्गीवासियों के पुनर्वास से संबंधित कार्यों की प्रगति और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित करने के लिए समयबद्ध योजना बनाने का निर्देश दिया है। राज्यपाल ने डीडीए को पांच किलोमीटर के दायरे में वैकल्पिक स्थलों की तुरंत पहचान करने का निर्देश दिया। उन्होंने चेतावनी दी कि किसी भी तरह की लापरवाही या भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

नई दिल्ली। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने अधिकारियों को अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित करने के लिए एक समयबद्ध योजना लाने का निर्देश दिया है। इस बात पर जोर दिया कि इस प्रक्रिया को सरल और परेशानी मुक्त बनाने की जरूरत है।

हाल ही में संसद द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली कानून (विशेष प्रावधान) 2023 पारित होने के बाद सक्सेना ने मुख्य सचिव, शहरी विकास, पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों, डीडीए के उपाध्यक्ष, एमसीडी के आयुक्त और के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने विभिन्न हितधारक विभागों/एजेंसियों के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को भी शामिल किया।

एलजी ने प्रगति कार्यों का लिया जायजा

अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने क्रमशः पीएम-उदय और पीएमएवाई (शहरी) के तहत अनधिकृत कालोनियों के नियमितीकरण और झुग्गीवासियों के पुनर्वास से संबंधित कार्यों की प्रगति और स्थिति का जायजा लिया। सक्सेना ने अधिकारियों से पीएम-उदय, पीएमएवाई और डीडीए की लैंड पूलिंग नीति के पूर्ण कार्यान्वयन के संबंध में विशिष्ट समयसीमा देने को कहा।

उपराज्यपाल को सूचित किया गया कि अनधिकृत कालोनियों की सीमाओं में अस्पष्टता, कट-आफ तिथियों के बार-बार विस्तार और अधिसूचित झुग्गी-झोपड़ी समूहों में अनिश्चितता ने इस मुद्दे को लंबे समय तक लटकाए रखा था और इसके कारण आखिरकार केंद्र को 2019 में पीएम-उदय और पीएमएवाई योजनाएं तैयार करनी पड़ीं।हालांकि उसके तुरंत बाद कोरोना महामारी शुरू होने के साथ काम पूरे जोरों पर नहीं किया जा सका।

समयबद्ध कार्ययोजना के साथ आने का निर्देश

एक अधिकारी ने कहा कि एलजी ने इस तथ्य पर आश्चर्य और चिंता व्यक्त की कि विभिन्न संस्करणों में यह अधिनियम दिसंबर, 2006 से लागू था और फिर भी महामारी के कारण उत्पन्न बाधाओं के बावजूद मामला लटका हुआ था। सक्सेना ने अधिकारियों को अनधिकृत कॉलोनियों के पंजीकरण, सत्यापन और उसके बाद नियमितीकरण के लिए एक ठोस समयबद्ध कार्ययोजना के साथ आने का निर्देश दिया।

साथ ही इस बात पर जोर दिया कि ऐसा करने की प्रक्रिया को सरल और परेशानी मुक्त बनाने की जरूरत है। उन्होंने चेतावनी दी कि किसी भी तरह की लापरवाही या भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उपराज्यपाल ने डीडीए को पांच किलोमीटर के दायरे में वैकल्पिक स्थलों की तुरंत पहचान करने का निर्देश दिया, जहां कानून के अनुसार यथास्थान पुनर्वास संभव नहीं है और झुग्गीवासियों को विभिन्न योजनाओं के तहत पहले से ही निर्मित फ्लैटों/घरों में सम्मानजनक जीवन के लिए पुनर्वासित किया जाए।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि एक माह के अन्दर पूरी योजना धरातल पर उतारी जाये और तत्काल ठोस कार्रवाई प्रारम्भ की जाये। उपराज्यपाल ने इस बात पर जोर दिया कि सभी कार्यों को हाल ही में संसद द्वारा पारित अधिनियम द्वारा प्रदान की गई 2026 तक की बाहरी सीमा से कम से कम एक वर्ष पहले पूरा किया जाना चाहिए।

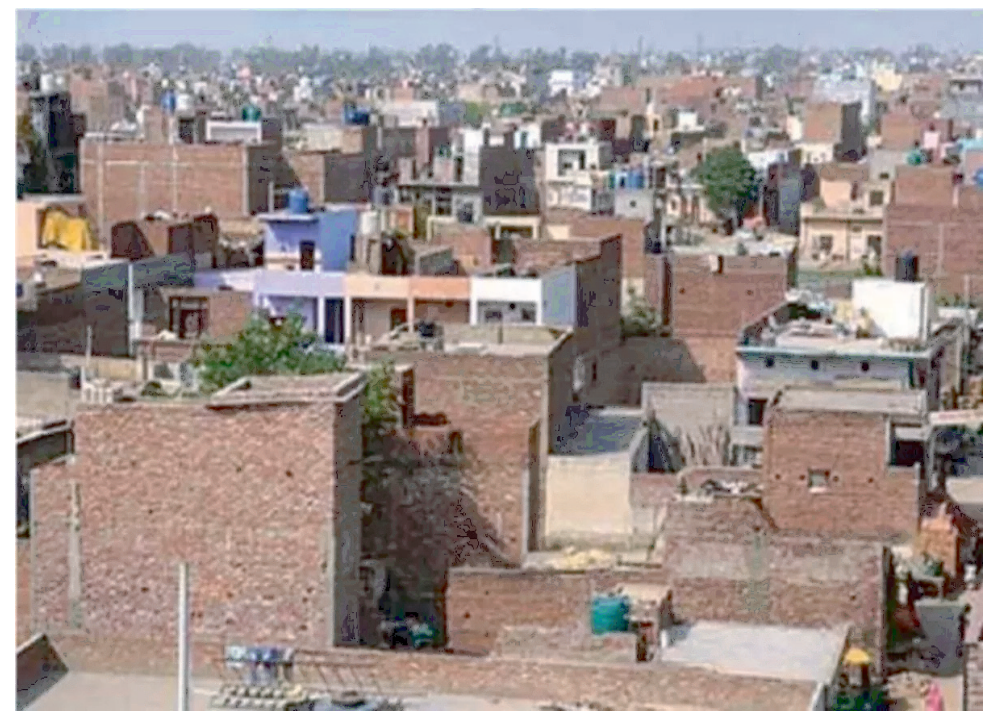

दिल्ली में 150 साल पुरानी मस्जिद को हटाएगा NDMC? लोगों से मांगे गए सुझाव

दिल्ली के उद्योग भवन के सामने गोल चोराहे पर स्थित सुनहरी बाग मस्जिद को हटाने के लिए एनडीएमसी ने लोगों से सुझाव मांगा है। लोग एक जनवरी को शाम पांच बजे तक cheif.architectndmc.gov.in पर भेज सकते हैं। वहीं मस्जिद से जुड़े लोगों का दावा है कि मस्जिद 150 साल पुरानी है। उद्योग भवन के सामने यह इलाका सुरक्षा की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है।

नई दिल्ली। उद्योग भवन के सामने गोल चोराहे पर स्थित सुनहरी बाग मस्जिद को हटाने के लिए नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने नागरिकों से सुझाव मांगे हैं। एनडीएमसी के मुख्य वास्तुकार की ओर इसके लिए सार्वजनिक सूचना जारी की है। इसके तहत इस इलाके में यातायात के सुचारु संचालन के लिए मस्जिद को हटाना है।

150 साल पुरानी है मस्जिद

नागरिक एक जनवरी को शाम पांच बजे तक cheif.architect@ndmc.gov.in पर सुझाव भेज सकते हैं। वहीं, मस्जिद से जुड़े लोगों का दावा है कि मस्जिद 150 साल पुरानी है। चूंकि, सेंट्रल विस्टा परियोजना के तहत यह इलाका पुर्नविकसित हो रहा है, आने वाले दिनों में यहां पर यातायात भी बढेगा। ऐसे में एनडीएमसी इस इलाके को यातायात की दृष्टि से दुरुस्त करना चाहता है।

सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है इलाका

उद्योग भवन के सामने यह इलाका सुरक्षा की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। इसके आसपास केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ ही रक्षा बलों उच्चस्थ अधिकारियों के कार्यालयों के भी करीब है। एनडीएमसी ने अपनी सार्वजनिक सूचना में यातायात पुलिस के उस पत्र का भी जिक्र किया है जिसमें यातायात संचालन को दुरुस्त करने के लिए पत्र आया था।

दिल्ली हाईकोर्ट ने बंद की सुनवाई

एनडीएमसी के अनुसार, यहां बढ़ते यातायात को देखते हुए दो बार यातायात पुलिस के साथ संयुक्त निरीक्षण हुआ है। इस दौरान इस मस्जिद को हटाने की या स्थानांतरित करने की सहमति बनी। इस मामले में दिल्ली वक्फ बोर्ड की याचिका की सुनवाई को हाईकोर्ट ने एजेंसियों के उस हलफनामें के बाद बंद कर दिया था, जिसमें एजेंसियों ने कानूनी तरीके से कार्रवाई करने की बात कही थी।

वक्फ बोर्ड ने अपनी याचिका में कहा था कि मस्जिद 150 वर्ष पुरानी है। इसमें पांचों वक्त की शुक्रवार और ईद की नमाज अदा की जाती है। उल्लेखनीय है कि सुनहरी बाग मस्जिद गोलचक्कर मौलाना आजाद रोड, मोतीलाल नेहरू मार्ग और कामराज मार्ग को जोड़ता है। सुनहरी बाग मस्जिद तीसरी श्रेणी की हेरीटेज साइट की सूची में शामिल भी है।

ये है नकली किन्नर... अपनी यह वाली इच्छा पूरी करने के लिए करता था ऐसा काम, पुलिस को करना पड़ा गिरफ्तार

किन्नर की वेशभूषा बनाकर लोगों के लूटपाट और झपटमारी करने वाले एक आरोपित को लालकिला चौकी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। नशे की इच्छा पूरा करने के लिए वह आपराधिक वारदात करता था। एक वाहन चालक से नकदी छीनकर भागने के दौरान पुलिस टीम ने उसका पीछा कर दबोच लिया। उसके पास से पीड़ित से छीने गए 810 रुपये बरामद कर लिए गए।

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने एक शख्स को गिरफ्तार किया है, जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए किन्नर बन गया था। वह अपनी इच्छा पूरी करने के लिए ऐसा काम करने लगा था कि लोग उससे परेशान होते थे। वह किन्नर की वेशभूषा में घूमता था।

आरोपी नकली किन्नर बनकर नशे की इच्छा पूरा करने के लिए वह आपराधिक वारदात करता था। एक वाहन चालक से नकदी छीनकर भागने के दौरान पुलिस टीम ने उसका पीछा कर दबोच लिया। उसके पास से पीड़ित से छीने गए 810 रुपये बरामद कर लिए गए।

आरोपित यमुना बाजार का रहने वाला है। वह व्यस्त बाजारों में किन्नर के वेशभूषा में लोगों को निशाना बनाता था। लोगों को गालियां देकर पैसे देने की मांग करता था और उनपर दबाव बनाता था। इसके खिलाफ दिल्ली के विभिन्न थानों में झपटमारी, लूटपाट, चोरी और हथियार अधिनियम के सात आपराधिक मामले दर्ज होने का पता चला है।

चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन के पास मांगे रुपये

डीसीपी उत्तरी जिला मनोज कुमार मीणा के मुताबिक 23 दिसंबर को सुबोध कुमार यादव ई-रिक्शा में पानी की आपूर्ति करने चांदनी चौक, मेट्रो स्टेशन गेट नंबर-चार के पास आया था। तभी एक किन्नर ने उसे रोकर पैसे की मांग की।

गाली देकर बनाने लगा दबाव

सुबोध ने जब मजबूरी बता पैसे देने से मना कर दिया तब वह उसके परिवार वालों को अपशब्द कहकर पैसे देने का दबाव बनाना शुरू कर दिया। दबाव बनाने पर जब उसने किन्नर को 10 रुपये का नोट दिया तब किन्नर नाराज हो गया और और सुबोध के हाथ से 810 रुपये छीनकर भाग गया। शिकायतकर्ता ने चोर-चोर चिल्लाते हुए किन्नर का पीछा करना शुरू कर दिया।

चोरी, झपटमारी व अन्य आपराधिक गतिविधियों की आगामी घटनाओं के मद्देनजर पास में गश्त कर रहे एसीपी विजय सिंह व इंस्पेक्टर नीरज कुमार के नेतृत्व में एसआई सतेंद्र सिंह, (लाल किला प्रभारी, हवलदार अमित और सिपाही राहुल की टीम ने करीब 50 मीटर तक पीछा करने के बाद उसे दबोच लिया। पकड़ा गया व्यक्ति किन्नर के बजाय पुरुष निकला।

उसकी पहचान दीपक उर्फ शिवानी के रूप में हुई। पूछताछ से पत चला कि वह मूलरूप से उत्तर प्रदेश के मेरठ का रहने वाला है। वह अक्सर दिल्ली आकर आवारागर्द के रूप में यमुना बाजार, कश्मीरी गेट इलाके में रहता है। वह नशे का आदी भी है, इसलिए नशे की लालसा को पूरा करने के लिए उसने व्यस्त बाजारों में इस प्रकार के अपराध करना शुरू कर दिया।

दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री ने एम्स के शेल्टर में रहने वाले तिमारदारों के साथ मनाया क्रिसमस

स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने एम्स के शेल्टर में रहने वाले तीमारदारों के साथ क्रिसमस मनाया। सौरभ भारद्वाज ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बच्चों और तिमारदारों के साथ क्रिसमस मनाने का वीडियो भी साझा किया। क्रिसमस पर्व पर पर्यटन स्थलों से लेकर रेस्त्रां व बाजार मस्ती में डूबे रहे। लोग परिवार व दोस्तों के साथ मौज मस्ती करने कर्तव्य पथ कनाट प्लेस चिड़ियाघर व लालकिला जैसे पर्यटन स्थल पहुंचे।

नई दिल्ली। क्रिसमस पर्व पर दिल्ली में आस्था के साथ मस्ती का अद्भूत संगम देखने को मिला। चर्च से लेकर घर तक में जहां इसाई समुदाय के लोगों ने भक्ति के साथ प्रभु यशु को याद किया और क्रिसमस की एक-दूसरे को शुभकामना दी।

इस मौके पर दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने एम्स के शेल्टर में रहने वाले तीमारदारों के साथ क्रिसमस मनाया। सौरभ भारद्वाज ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बच्चों और तिमारदारों के साथ क्रिसमस मनाने का वीडियो भी साझा किया।

बता दें कि क्रिसमस पर्व पर पर्यटन स्थलों से लेकर रेस्त्रां व बाजार मस्ती में डूबे रहे। लोग परिवार व दोस्तों के साथ मौज मस्ती करने कर्तव्य पथ, कनाट प्लेस, चिड़ियाघर व लालकिला जैसे पर्यटन स्थल पहुंचे। इससे इन स्थान विशेष पर जाम की स्थिति देखने को मिली। क्रिसमस पर सभी चर्च रोशनी में नहाए हुए थे।

एक ही लड़की को दिल दे बैठे दो युवक, जब दोनों में नहीं बनी बात; तो फिर हुआ ये अंजाम

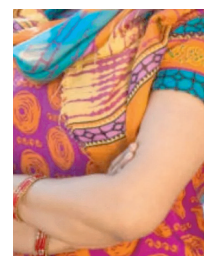

त्रिकोणीय प्रेम संघर्ष में युवक की हत्या के आरोपित पवन तिवारी ने बताया कि जिस लड़की से वह प्यार करता था उससे सचिन नजदीकियां बढ़ाने लगा। उसने उसे लड़की से दूर रहने के लिए कहा लेकिन उसने बातों को अनसुना कर दिया। उसके बाद उसने सचिन की हत्या की साजिश रची। शराब पीने के बहाने नाले पर बुलाया और उसकी गला घोंटकर हत्या कर दी।

पश्चिमी दिल्ली। त्रिकोणीय प्रेम प्रसंग से जुड़े मामले में एक युवक की दूसरे युवक ने हत्या कर दी। दोनों एक ही युवती से प्रेम करते थे। जब यह बात आरोपित को पता चली तो उसने दूसरे युवक को रास्ते से हटाने की ठान ली और अपने एक साथी के साथ मिलकर गला घोटकर हत्या कर दी। आरोपित व उसके दो साथी गिरफ्तार

पुलिस ने आरोपित व उसके साथी दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। मामले की जांच जारी है। आरोपित का नाम पवन तिवारी है। इसपर 21 आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिसमें फर्जी पासपोर्ट बनाना और नकली करेंसी बनाने का मामला भी शामिल है। दूसरे आरोपित का नाम पवन सिंह है।

दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने खून से सना कपड़ा, मृतक का पर्स, दो मोबाइल फोन और वारदात में इस्तेमाल स्कूटी बरामद कर ली है। मामले की जांच जारी है। पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि 16 दिसंबर को विकासपुरी इलाके में पुलिसकर्मी को गश्त के दौरान केशोपुर गंदा नाला के पास एक युवक का शव नजर आया।

जीवनसाथी का सार्वजनिक रूप से अपमान करना क्रूरता, महिला की याचिका खारिज करते हुए दिल्ली हाईकोर्ट की टिप्पणी

दिल्ली हाईकोर्ट ने माना है कि पति को सार्वजनिक रूप से परेशान और अपमानित करने का कृत्य अत्यधिक क्रूरता के दायरे में आता है। अदालत ने कहा कि एक पति या पत्नी की छवि को सार्वजनिक रूप से खराब करने के लिए जीवनसाथी द्वारा लगाए गए लापरवाह अपमानजनक और निराधार आरोप क्रूरता के सिवा कुछ नहीं है।

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने माना है कि पति को सार्वजनिक रूप से परेशान और अपमानित करने का कृत्य अत्यधिक क्रूरता के दायरे में आता है। अदालत ने कहा कि एक पति या पत्नी की छवि को सार्वजनिक रूप से खराब करने के लिए जीवनसाथी द्वारा लगाए गए लापरवाह, अपमानजनक और निराधार आरोप क्रूरता के सिवा कुछ नहीं है। वैवाहिक संबंध विश्वास पर टिका है और एक जीवनसाथी से इस तरह के अपमानजनक आचरण की उम्मीद नहीं की जा सकती है।

अदालत ने उक्त टिप्पणी पति को तलाक देने के तीस हजारी के पारिवारिक अदालत के 31 अगस्त 2016 के निर्णय को चुनौती देने वाली महिला की याचिका पर की। न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत व न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा की पीठ ने कहा कि कोई भी जीवनसाथी न केवल अपने साथी से यह अपेक्षा करता है कि वह उनका सम्मान करे, बल्कि यह भी सोचता है कि जरूरत के समय उसकी छवि और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए ढाल के रूप में कार्य करे।

कार्यालय में भी किया अपमान

हालांकि, दुर्भाग्य से यह ऐसा मामला है कि जहां पति को उसकी पत्नी द्वारा सार्वजनिक रूप से परेशान, अपमानित करने के लिए हमला किया जा रहा है।

अदालत ने पाया कि महिला ने कार्यालय की बैठकों के दौरान अपने पति पर उसके कर्मचारियों/मेहमानों के सामने बेवफाई का आरोप लगाने की हद पार करने के साथ ही उसके कार्यालय की महिला कर्मियों को भी परेशान किया था।

बच्चे को हथियार के रूप में किया इस्तेमाल

इतना ही नहीं महिला ने बच्चे को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और उसे पति से पूरी तरह अलग कर दिया। अदालत ने माना कि पिता के लिए अपने बच्चे को दूर जाते और पूरी तरह से उसके खिलाफ होते देखने से ज्यादा दर्दनाक कुछ नहीं हो सकता।

अदालत ने कहा कि वैवाहिक जीवन के छह वर्षों की अवधि में हुई ऐसी हरकतों से साबित होता है कि पति क्रूरता और उत्पीड़न का शिकार था। इसके कारण वह कभी-कभी आत्महत्या करने के बारे में भी सोचने को विवश हुआ। उक्त तथ्यों को देखते हुए पारिवारिक अदालत के निर्णय में हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

महिला की शादी प्रतिवादी से फरवरी 2000 में हुई थी और उन्हें एक बेटा भी है। प्रतिवादी पति का आरोप है कि उसकी पत्नी उस पर शक करती थी और उस पर अन्य महिलाओं में रुचि होने का आरोप लगाती थी।

चिल्लाती रही मां... बेटी को कार में किडनैप कर ले गए दो लोग; तलाश करने में जुटी पुलिस

एक सवाल के जवाब में कहा कि राम मन्दिर का निर्माण हम (सपा) भी कराते यदि हम सरकार में होते। मन्दिर का निर्माण कोर्ट के आदेश पर हो रहा है। शिवपाल ने हमला बोलते हुए कहा कि भाजपा मन्दिर बनाने का श्रेय ले रही है। वहीं जब सपा नेता से रामभक्तों पर गोली चलाने को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा...

परिवहन विशेष न्यूज

मेरठ जिले के परतापुर की एक कॉलोनी की महिला गृहणी हैं। उनकी 18 वर्षीय बेटी एक कॉलेज की छात्रा है। दोनों मोदीनगर में एक मंदिर के पास किसी काम से आए थे। इस बीच अचानक एक सेंट्रो कार वहां आकर रूकी। उसमें से दो आरोपित उतरे और छात्रा का अपहरण कर लिया। कार में डालकर आरोपित उसे ले गए।

मोदीनगर। कोतवाली क्षेत्र में एक मंदिर के निकट आरोपितों ने मां के सामने से बेटी का अपहरण कर लिया। आरोपित युवती को कार में डालकर ले गए। शोर मचाने पर भी वे नहीं रूके। शक के आधार पर चार आरोपितों के खिलाफ पुलिस ने अपहरण की धारा में केस दर्ज किया है।

मंदिर के पास गई थीं दोनों

रविवार को मोदीनगर व भोजपुर थाने में दो किशोरी व दो युवती लापता होने के मामले दर्ज हुए हैं। पुलिस सभी की तलाश में जुटी है। मेरठ जिले के परतापुर की एक कॉलोनी की महिला गृहणी हैं। उनकी 18 वर्षीय बेटी एक कॉलेज की छात्रा है। दोनों मोदीनगर में एक मंदिर के पास किसी काम से आए थे।

इस बीच अचानक एक सेंट्रो कार वहां आकर रूकी। उसमें से दो आरोपित उतरे और छात्रा का अपहरण कर लिया। कार में डालकर आरोपित उसे ले गए। महिला ने उनकी पीछा किया और शोर मचाया, लेकिन वे कार की रफ्तार बढ़ाकर फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तलाश की, लेकिन पता नहीं चला। पुलिस की तीन टीमें छात्रा की बरामदगी के लिए लगाई गई हैं।

चार आरोपितों पर युवती के अपहरण का आरोप

भोजपुर थाना क्षेत्र के एक गांव से 25 वर्षीय युवती लापता हो गई। स्वजन ने गांव के ही चार युवकों पर अपहरण का आरोप लगाया है। युवती के पिता किसान है। उनके गायब होने के बाद से ही स्वजन को रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने पिता की शिकायत पर केस दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

बाजार से सामान लेने गई 15 वर्षीय किशोरी लापता

दिल्ली-मेरठ मार्ग पर तेल मिल कालोनी के निकट 15 वर्षीय किशोरी लापता हो गई। वह बाजार से सामान लेने के लिए निकली थी। शाम तक भी घर नहीं पहुंची तो स्वजन ने आसपास में पता किया, लेकिन सुराग नहीं लगा। उसका मोबाइल भी बंद है। मामले में किशोरी की दादी की शिकायत पर केस दर्ज कर पुलिस ने तलाश शुरू कर दी है।

स्कूल गई 14 वर्षीय किशोरी लापता

स्कूल के लिए घर से निकली 14 वर्षीय किशोरी भी लापता हो गई। वह गोविंदपुरी स्थित एक कॉलोनी की रहने वाली है। जब कहीं भी पता नहीं चला तो स्वजन ने थाने में शिकायत की। किसी परिचित ने उन्हें बताया कि किशोरी को मेरठ के अनिकेत के साथ देखा गया है। पुलिस ने अनिकेत के खिलाफ अपहरण का केस दर्ज किया है।

सभी मामले दर्ज किये गए हैं। इनकी तलाश में पुलिस जुटी है। जल्द इनकी सकुशल बरामदगी होगी। - ज्ञान प्रकाश राय, एसीपी मोदीनगर।

सिलेंडर ब्लास्ट में उड़ी घर की छत, आसपास के मकान भी हिले; दंपती व बेटा गंभीर

54 वर्षीय सुभाष अपनी 49 वर्षीय पत्नी सपना व 20 वर्षीय बेटे निखिल के साथ शक्ति नगर में किराये से रहते हैं। वह परिवार सहित रात को सो गए थे। जब सुबह चाय बनाने के लिए गैस जलाने के लिए माचिस जलाई तो जोरदार धमाका हो गया। इस धमाके से न केवल मकान की छत गिर गई बल्कि आसपास के मकान तक हिल गए।

गुरुग्राम। सेक्टर-10 थाना क्षेत्र के शक्ति नगर में एक घर में सोमवार सुबह चाय बनाने के दौरान गैस सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। ब्लास्ट इतना जबरदस्त था कि घर की छत तक उड़ गई। इस घटना में पति-पत्नी और उनका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों को इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

किराए के मकान में रहता था परिवार

जानकारी के अनुसार, उत्तर प्रदेश के रायबरेली निवासी 54 वर्षीय सुभाष अपनी 49 वर्षीय पत्नी सपना व 20 वर्षीय बेटे निखिल के साथ शक्ति नगर में किराये से रहते हैं। वह परिवार सहित रात को सो गए थे। सुबह जब वह उठे तो उन्हें घर में गैस की बदबू आ रही थी। इस बदबू को उन्होंने नजरअंदाज कर दिया।

धमाके से हिल गए आसपास के मकान

इसी दौरान वह चाय बनाने लगे। बताया जा रहा है कि जैसे ही चाय बनाने के लिए गैस जलाने के लिए माचिस जलाई तो जोरदार धमाका हो गया। इस धमाके से न केवल मकान की छत गिर गई, बल्कि आसपास के मकान तक हिल गए। आसपास के लोगों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने तीनों घायलों को सिविल अस्पताल पहुंचाया।

निजी अस्पताल में तीनों भर्ती

यहां स्थिति गंभीर होने पर सभी को सफदरजंग रेफर कर दिया गया। मकान मालिक ने अपने स्तर से तीनों को वहां न ले जाकर गुरुग्राम के ही निजी अस्पताल में भर्ती कराया। सेक्टर-10 थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि जांच में सामने आय कि रात में ही घर के लोगों ने गलती से गैस खुली छोड़ दी थी।

पहली कक्षा की छात्रा से की दरिंदगी' बाद में पकड़ने लगा पैर, पीड़ति बच्ची बोली- पुलिस दीदी इसे सजा दो

17 दिसंबर को घर से कुछ दूरी पर ही भंडारा लगा हुआ था। बच्ची अकेले ही भंडारे का प्रसाद लेने के लिए गई थी। वहां पर उसे ढाबे पर काम करने वाला कर्मचारी लवकुश मिला। घुमाने की बात कहकर बच्ची को सूनसान स्थान पर बने एक खंडहर में ले गया। जहां उसने बच्ची से दरिंदगी की। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

साहिबाबाद। लिंक रोड थाना क्षेत्र की एक कॉलोनी में भंडारे प्रसाद लेने गई आठ साल की बच्ची से ढाबा कर्मचारी ने दरिंदगी की। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। शनिवार को बच्चे ने दरिंदे को देखा तो अपनी नानी से आपबीती बताई।

स्वजन की शिकायत पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। बच्ची का मेडिकल परीक्षण कराया गया है। लिंक रोड थाना क्षेत्र की एक कॉलोनी में एक आठ साल की बच्ची नाना-नानी के साथ रहती है। बच्ची के माता पिता गुजर चुके हैं। वह क्षेत्र के ही एक स्कूल में पहली कक्षा की छात्रा है।

भंडारे में प्रसाद लेने गई थी बच्ची

17 दिसंबर को घर से कुछ दूरी पर ही भंडारा लगा हुआ था। बच्ची अकेले ही भंडारे का प्रसाद लेने के लिए गई थी। वहां पर उसे ढाबे पर काम करने वाला कर्मचारी लवकुश मिला। वह पहले से बच्ची को जानता था। घुमाने की बात कहकर बच्ची को सूनसान स्थान पर बने एक खंडहर में ले गया। जहां उसने बच्ची से दरिंदगी की। बच्ची चीखने चिल्लाने लगी। उसने डरा धमका कर चुप करा दिया।

किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी देकर भाग गया। बच्ची भी अपने घर आ गई। उसने किसी से कुछ नहीं बताया। शनिवार को बच्ची अपनी नानी के साथ थी। आरोपित घर के पास से गुजरा तो बच्ची ने उसे पहचान लिया। नानी को पूरे मामले की जानकारी दी।

महिला पहुंची घर तो जोड़ने लगा हाथ पैर

बच्ची के साथ दरिंदगी की बात सुनकर नानी के पैर तले जमीन खिसक गई। कुछ देर के लिए वह शांत हो गईं। फिर वह आरोपित के घर पहुंची और उसकी करतूत के बारे में पूछा। खुद को घिरता देखकर आरोपित उनके हाथ पैर जोड़ने लगा। मौका देखकर वहां से फरार हो गया। पीड़िता ने रविवार दोपहर लिंकरोड थाने पहुंचकर पुलिस से शिकायत की। पुलिस रिपोर्ट दर्ज की।

बच्ची बोली पुलिस दीदी इससे सजा जरुर देना

घटना के बाद बच्ची नानी के साथ थाने पर आई थी। महिला कॉन्स्टेबल और थाना प्रभारी ने उससे जानकारी की तो बच्ची ने घटना बताई। बच्ची ने थाना प्रभारी से कहा कि वह अभी छोटी है, इससे सजा नहीं दे सकती। पुलिस दीदी आप इसे छोड़ना मत, सजा जरुर देना।

स्वजन की शिकायत पर आरोपित के खिलाफ दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट में रिपोर्ट दर्ज कर ली है। आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। बच्ची का मेडिकल परीक्षण करा लिया है। -रजनीश कुमार उपाध्याय, सहायक पुलिस आयुक्त, साहिबाबाद।

जगन्नाथ मंदिर निर्माण के दौरान भरभराकर गिरी पावर हाउस की दीवार, एक मजदूर की मौत

गुरुग्राम के सेक्टर-15 पार्ट दो स्थित जगन्नाथ मंदिर के निर्माण के लिए की जा रही बेसमेंट की खुदाई के दौरान पड़ोस में स्थिति पावर हाउस की दीवार गिर गई। हादसे में एक श्रमिक इसमें दब गया। वहीं काम कर रहे चार अन्य श्रमिक फौरन वहां से भाग निकले। पुलिस एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची।

गुरुग्राम। सेक्टर-15 पार्ट दो स्थित जगन्नाथ मंदिर के निर्माण के लिए की जा रही बेसमेंट की खुदाई के दौरान पड़ोस में स्थिति पावर हाउस की दीवार गिर गई। हादसे में एक श्रमिक इसमें दब गया। वहीं काम कर रहे चार अन्य श्रमिक फौरन वहां से भाग निकले। पुलिस, एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची। करीब 45 मिनट बाद मलबे में दबे श्रमिक को निकाला गया। इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। इस पूरे मामले में ठेकेदार की लापरवाही सामने आई है। पता चला है कि जब श्रमिक वहां काम कर रहे थे तब वह वहां पर मौजूद नहीं था।

जगन्नाथ मंदिर कमेटी की ओर से मंदिर का नए तरीके से निर्माण कराया जा रहा था। करीब एक महीने पहले ठेका सरस्वती एनक्लेव निवासी ठेकेदार अवधेश कुमार की कंपनी अयान एसोसिएट्स को दिया गया था। ठेकेदार अवधेश यहां पांच श्रमिकों के साथ बेसमेंट की खुदाई करा रहे थे।

एक महीने पहले बेसमेंट खोदा गया था, ग्रेप लगने के कारण यहां निर्माण कार्य बंद हो गया था। बीते दिनों ग्रेप हटने के बाद दस दिन पहले फिर से काम शुरू हुआ। सोमवार दोपहर ढाई बजे पांच श्रमिक यहां बेसमेंट में खुदाई का कार्य पूरा कर रहे थे। इसी दौरान पड़ोस में स्थित पावर हाउस की दीवार का निचला हिस्सा ढह गया।

मलबा नीचे आते देख यहां काम कर रहे श्रमिकों ने शोर मचाया तो चार श्रमिक मौके से भागने लगे, लेकिन राजेश कुमार खैरवार यहां से भाग नहीं पाए और इसी मलबे के नीचे दब गए। सूचना मिलते ही पुलिस-प्रशासन व एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंच गई और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया।

जेसीबी मंगाकर मिट्टी को हटाया गया और करीब 45 मिनट बाद श्रमिक आधा दबा हुआ मलबे में दिखाई दिया। टीम ने फौरन उन्हें निकाला और अस्पताल में भर्ती कराया। यहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। 26 वर्षीय राजेश मूल रूप से मध्य प्रदेश के सतना का रहने वाले थे और वह यहां सेक्टर 15 में रह रहे थे।

पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस यह भी जांच रही है कि बेसमेंट की खुदाई के लिए विभागीय अनुमति ली गई थी अथवा नहीं। मजदूरों की सुरक्षा के क्या इंतजाम किए गए थे। मामले की जांच के बाद जो भी तथ्य सामने आएंगे उसी आधार पर ही कार्रवाई की जाएगी। -मुकेश कुमार, एसीपी

संवेदनशील साहित्य के संवाहक थे अटल जी

डॉ. राकेश मिश्र

अटलजी ने कई पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा उनके लेख, उनकी कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, जिनमें राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, धर्मयुग, नई कमल ज्योति, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादिम्बनी और नवनीत आदि सम्मिलित हैं।

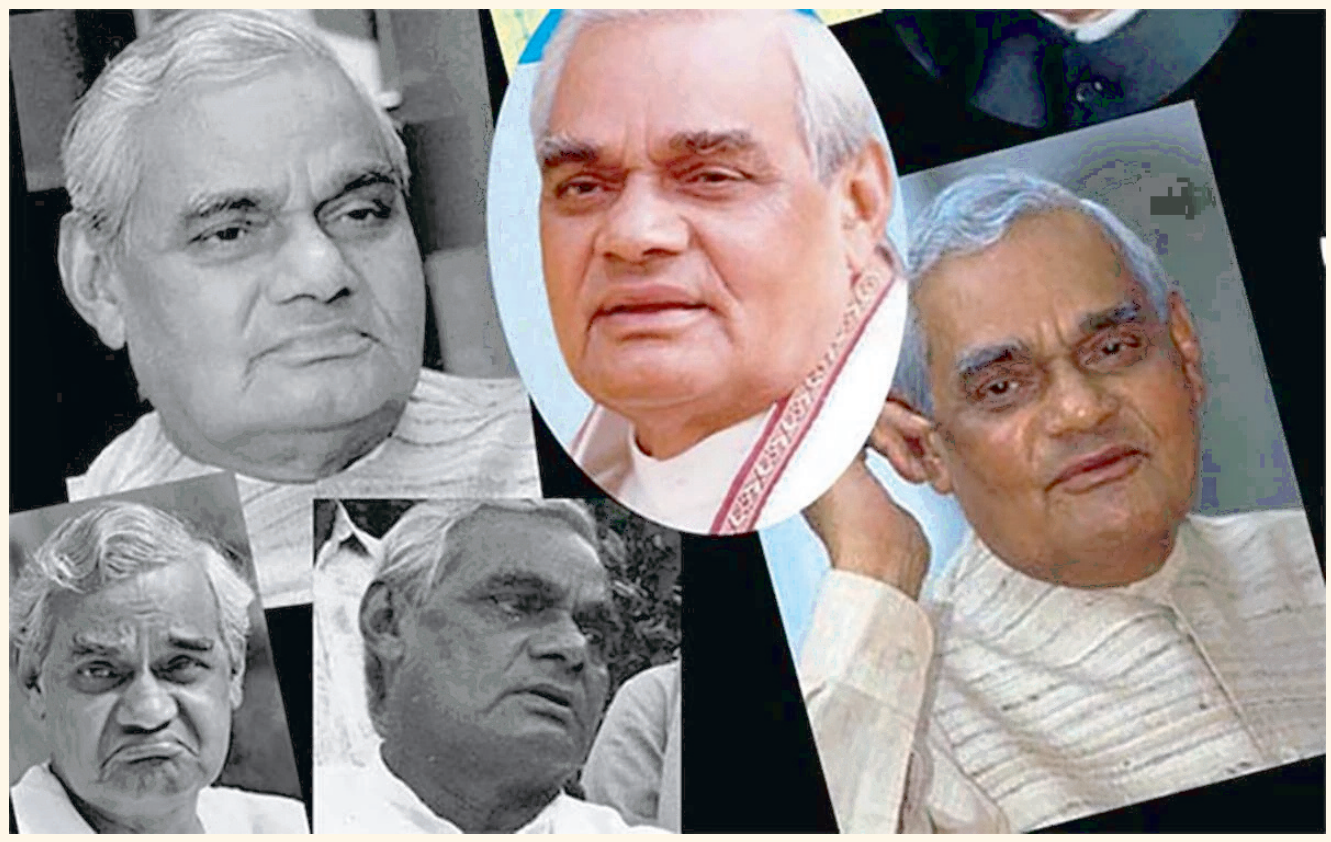

पं. अटल बिहारी वाजपेयी का नाम लेने से ऐसे विराट व्यक्ति का बोध होता है, जिसके व्यक्तित्व की व्यापकता असीमित है। एक राजनेता के रूप में तो उन्हें हर कोई जानता और मानता है। लेकिन, एक संवेदनशील साहित्यकार के रूप में भी वे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के कण-कण में समाहित हैं। उनकी प्रतिभा बाल्यकाल में ही प्रस्फुटित हो चुकी थी। जब वह पांचवीं कक्षा में ही थे तो उन्होंने प्रथम बार भाषण दिया था, जिससे लोग काफी प्रभावित हुए थे। उच्च शिक्षा के लिए जब वे विक्टोरिया कॉलेजियट स्कूल में नामांकित थे तो उन्होंने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा प्रथम पुरस्कार जीता। कॉलेज जीवन में ही उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया था, लेकिन साहित्य की साधना भी करते रहे।

अटलजी राजनीति में रहते हुए साहित्य से जुड़े रहे या साहित्य की साधना करते हुए राजनीति के रंग में रंगे रहे, यह निर्णय करना थोड़ा कठिन है। वैसे अटलजी कहा करते थे कि राजनीति और साहित्य दोनों ही जीवन के अंग हैं। लेकिन, प्रायः राजनीति से जुड़े लोग साहित्य के लिए समय नहीं निकाल पाते और साहित्य से जुड़े लोग राजनीति में रूचि नहीं दिखा पाते। लेकिन, अटलजी ने एक नजीर पेश की और दोनों से जुड़े रहे, दोनों के लिए समय देते रहे। परंतु आज के राजनेता साहित्य से दूर हैं, इसी कारण उनमें मानवीय संवेदना का स्रोत सूख-सा गया है। कवि संवेदनशील होता है। एक कवि के हृदय में दया, क्षमा, करुणा और प्रेम होता है, इसलिए वह खून की होली नहीं खेल सकता। साहित्यकार को पहले अपने प्रति सच्चा होना चाहिए। इसके पश्चात उसे समाज के प्रति अपने दायित्य का सही अर्थों में निर्वाह करना चाहिए। वह भले ही वर्तमान को लेकर चले, किंतु उसे आने वाले कल की भी चिंता करनी चाहिए। अतीत में जो श्रेष्ठ है, उससे वह प्रेरणा ले, परंतु यह कभी न भूले कि उसे भविष्य का सुंदर निर्माण करना है। उसे ऐसे साहित्य की रचना करनी है, जो मानव मात्र के कल्याण की बात करे। अटलजी की कविताओं में राष्ट्रवाद, सनातन संस्कृति, जीवन यथार्थ, सामाजिक चेतना का बोध होता है। अटल बिहारी वाजपेयी का नाम ऐसे कवि के रूप में लिया जाता है जिन्होंने अपनी सरल और सुगम कविता से ही लोगों का दिल जीत लिया है। उनकी कविताएं भावपूर्ण होती थी जिन्हें समझना आसान होता था और उनकी कविताएं बहुत ही सरल शैली में लिखी जाती थी जो सीधे ही पढ़ने वाले के हृदय तक जाती थी।

अटलजी ने कई पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा उनके लेख, उनकी कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, जिनमें राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, धर्मयुग, नई कमल ज्योति, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादिम्बनी और नवनीत आदि सम्मिलित हैं। राष्ट्र के प्रति उनकी समर्पित सेवाओं के लिए 25 जनवरी, 1992 में राष्ट्रपति ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 28 सितंबर 1992 को उन्हें 'हिंदी गौरव' से सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्हें 51 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की गई, परंतु उन्होंने उसी समय इसे सम्मान सहित संस्थान को अपनी ओर से भेंट कर दिया। अगले वर्ष 20 अप्रैल 1993 को कानपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की उपाधि प्रदान की। उनके सेवाभावी और त्यागी जीवन के लिए उन्हें पहली अगस्त 1994 को कमान्य तिलक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके पश्चात 17 अगस्त 1994 को संसद ने उन्हें श्रेष्ठ सासंद चुना तथा पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके बाद 27 मार्च, 2015 को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इतने महत्वपूर्ण सम्मान पाने वाले अटलजी की उदारता अनुपम है। उन्होंने कहा कि मैं अपनी सीमाओं से परिचित हूं। मुझे अपनी कमियों का अहसास है। निर्णायकों ने अवश्य ही मेरी न्यूनताओं को नजरअंदाज करके मेरा चयन किया है। सद्भाव में अभाव दिखाई नहीं देता है। यह देश बड़ा है अद्भुत है, बड़ा अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा सकता है।

अटलजी 'रामचरितमानस' को अपने लिए प्रेरणा का स्रोत मानते थे। उन्होंने कहा था कि जीवन की समग्रता का जो वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने किया है, वैसा विश्व-साहित्य में नहीं हुआ है। काव्य लेखन के बारे में उनका कहना था कि साहित्य के प्रति रुचि मुझे उत्तराधिकार के रूप में मिली है। परिवार का वातावरण साहित्यिक था। उनके बाबा पंडित श्यामलाल वाजपेयी बटेश्वर में रहते थे। उन्हें संस्कृत और हिन्दी की कविताओं में बहुत रुचि थी। यद्यपि वे कवि नहीं थे, परंतु काव्य प्रेमी थे। उन्हें दोनों ही भाषाओं की बहुत सी कविताएं कंठस्थ थीं। वे अकसर बोलचाल में छंदों को उदधृत करते थे। उनके पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत के प्रसिद्ध कवि थे। वे ब्रज और खड़ी बोली में काव्य लेखन करते थे। उनकी कविता 'ईश्वर प्रार्थना' विद्यालयों में प्रातः सामूहिक रूप से गाई जाती थी। यह सब देख-सुन कर मन को अति प्रसन्नता मिलती थी। पिता जी की देखा-देखी वे भी तुकबंदी करने लगा। फिर कवि सम्मेलनों में जाने लगे। ग्वालियर की हिंदी साहित्य सभा की गोष्ठियों में कविताएं पढ़ने लगे। लोगों द्वारा प्रशंसा मिली प्रशंसा ने उत्साह बढ़ाया।

अटलजी स्वयं कहते हैं कि सच्चाई यह है कि कविता और राजनीति साथ-साथ नहीं चल सकतीं। ऐसी राजनीति, जिसमें प्रायः प्रतिदिन भाषण देना जरूरी है और भाषण भी ऐसा जो श्रोताओं को प्रभावित कर सके, तो फिर कविता की एकांत साधना के लिए समय और वातावरण ही कहां मिल पाता है। उन्होंने जो कविताएं लिखी हैं, वे परिस्थिति-सापेक्ष हैं और आसपास की दुनिया को प्रतिबिम्बित करती हैं।

अटलजी ने कई पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा उनके लेख, उनकी कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, जिनमें राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, धर्मयुग, नई कमल ज्योति, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादिम्बनी और नवनीत आदि सम्मिलित हैं। राष्ट्र के प्रति उनकी समर्पित सेवाओं के लिए 25 जनवरी, 1992 में राष्ट्रपति ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 28 सितंबर 1992 को उन्हें 'हिंदी गौरव' से सम्मानित किया।

अपने कवि के प्रति ईमानदार रहने के लिए उन्हें काफी कीमत भी चुकानी पड़ी, किंतु कवि और राजनीतिक कार्यकर्ता के बीच मेल बिठाने का वे निरंतर प्रयास करते रहे। अटलजी कहते थे कि- कभी-कभी इच्छा होती है कि सब कुछ छोड़कर कहीं एकांत में पढ़ने, लिखने और चिंतन करने में अपने को खो दूं, किंतु ऐसा नहीं कर पाता। मैं यह भी जानता हूं कि मेरे पाठक मेरी कविता के प्रेमी इसलिए हैं कि वे इस बात से खुश हैं कि मैं राजनीति के रेगिस्तान में रहते हुए भी, अपने हृदय में छोटी-सी स्नेह-सलिला बहाए रखता हूं।

25 दिसंबर 1924 को जन्म लेने वाले विराट व्यक्तित्व श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को, उनकी ही कविता की चंद पंक्तियों से जयंती पर सादर श्रद्धांजलि।

जाने कितनी बार जिया हूँ,
जाने कितनी बार मरा हूँ।
जन्म मरण के फेरे से मैं,
इतना पहले नहीं डरा हूँ।
अन्तहीन अंधियार ज्योति की,
कब तक और तलाश करूँगा।
मैंने जन्म नहीं माँगा था,
किन्तु मरण की मांग करूँगा।
बचपन, यौवन और बुढ़ापा,
कुछ दशकों में ख़त्म कहानी।
फिर-फिर जीना, फिर-फिर मरना,
यह मजबूरी या मनमानी?

- डॉ. राकेश मिश्र
अध्यक्ष, पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास, सतना

ईयर एंडर 2023: 400cc सेगमेंट में इन बाइक्स का रहा दबदबा, एपरिला RS 457 और हार्ले X440 लिस्ट में शामिल

साल 2023 को दोपहिया वाहनों की लॉन्चिंग के हिसाब से देखा जाए तो यह काफी शानदार रहा है। इस साल तमाम बाइक भारतीय मार्केट में उतारी गई हैं। खासतौर से 350 सीसी और 400 सीसी सेगमेंट में कई मोटरसाइकिल लॉन्च हुई हैं। इनमें Aprilia RS 457 और Harley X440 सहित कई बड़े नाम शामिल हैं। आइए इनके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। देश का दोपहिया सेगमेंट तेजी से विस्तार कर रहा है। इस साल भारत में कई दमदार मोटरसाइकिल पेश की गई हैं। खासकर 350 और 400 सीसी सेगमेंट की बात करें तो इस साल Aprilia RS 457 और Harley X440 सहित कई ऐसी बाइक मार्केट में आई हैं। जो ग्राहकों की खूब पसंद बनी हैं। आइए इस खबर में जान लेते हैं इस साल लॉन्च की गई बाइक्स के बारे में।

Royal Enfield Himalayan 450

रॉयल एनफील्ड ने इस साल Himalayan 450 को भारतीय मार्केट में 451.65 सीसी के इंजन के साथ लॉन्च किया। बाइक के इंजन को Sherpa 450 नाम दिया गया है। ये इंजन 40 बीएचपी की अधिकतम शक्ति और 40 एनएम का पीक टॉर्क पैदा करने में सक्षम है।

Triumph Speed 400

जुलाई 2023 में ट्रायंफ स्पीड 400 भी दमदार फीचर्स के साथ भारतीय बाजार में उतारी गई थी। इसमें 398 सीसी का लिक्विड कूल सिलेंडर इंजन प्रदान किया जाता है। जो 40 बीएचपी की शक्ति और 37.5 एनएम का पीक टॉर्क उत्पन्न कर सकता है।

KTM 390 Duke

3.10 लाख रुपये की एक्सशोरूम कीमत पर केटीएम 390 ड्यूक की एंट्री हुई। इसमें 46 बीएचपी की शक्ति और 39 एनएम का टॉर्क पैदा करने वाला 399 सीसी का इंजन दिया गया है।

Aprilia RS 457

स्पोर्ट बाइक प्रेमियों के लिए इस बाइक को भारतीय मार्केट में लॉन्च किया। इसमें लिक्विड कूल पैरलल ट्विन इंजन दिया जाता है। बाइक का इंजन 47.6 बीएचपी की शक्ति और 43.5 एनएम का पीक टॉर्क पैदा कर सकता है।

Harley X440

इसमें 440 सीसी की क्षमता वाला इंजन दिया जाता है जो 27 बीएचपी की पावर और 38 एनएम का टॉर्क निकालता है। इसकी कीमत 2.39 लाख रुपये (एक्सशोरूम) से शुरू होकर 2.79 लाख रुपये तक जाती है।

साल 2024 में लॉन्च होंगी ये 3 प्रीमियम सेडान, नई डिजायर से लेकर कैमरे लिस्ट में शामिल

अपने इस लेख में हम आपके लिए साल 2023 में आने वाली 3 नई सेडान कारों के बारे में बताने जा रहे हैं।उम्मीद है कि ऑल न्यू डिजायर को 2024 की दूसरी छमाही में लॉन्च किया जाएगा। वहीं Toyota Camry Facelift को भारत में 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत में उसी पेट्रोल/हाइब्रिड संयोजन के साथ लॉन्च किया जाएगा।

नई दिल्ली। लगातार बढ़ रही SUVs की मांग के बीच देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनियां नई Sedan Cars को भी पेश करने की योजना बना रही हैं। अपने इस लेख में हम आपके लिए साल 2023 में आने वाली 3 नई सेडान कारों के बारे में बताने जा रहे हैं। हमारी इस लिस्ट में New-Gen Maruti Suzuki Dzire, Toyota Camry Facelift और Citroen C3X शामिल है।

New-Gen Maruti Suzuki Dzire

2024 की शुरुआत में अपेक्षित नई पीढ़ी की स्विफ्ट से महत्वपूर्ण डिजाइन संकेत लेते हुए, आगामी डिजायर में एक नया पावरट्रेन और अपडेटेड इंटीरियर भी दिया जाएगा। ये नए 1.2L Z-सीरीज माइल्ड-हाइब्रिड पेट्रोल इंजन से लैस होगी, जो मैनुअल या ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन से जुड़ा होगा। उम्मीद है कि ऑल न्यू डिजायर को 2024 की दूसरी छमाही में लॉन्च किया जाएगा।

Toyota Camry Facelift

Toyota Camry प्रीमियम सेडान को अपडेटेड एक्सटीरियर के साथ एक नया फ्रंट एंड दिया जाएगा। इसके इंटीरियर को खास अपडेट मिले की संभावना नहीं है। उम्मीद है कि ये भारत में 2024 के अंत में या 2025 की शुरुआत में उसी पेट्रोल/हाइब्रिड संयोजन के साथ लॉन्च होगी।

Citroen C3X

Citroen C3X क्रॉसओवर सेडान का पावरट्रेन और फीचर लिस्ट C3 एयरक्रॉस से लिया जाएगा। इसमें फास्टबैक रूफलाइन होगी और इसके मिडसाइज एसयूवी सिबलिंग की तुलना में पीछे का डिजाइन नया होगा। इसका मुकाबला होंडा सिटी, हुंडई वर्ना, फॉक्सवैगन वर्टस, स्कोडा स्लाविया और मारुति सुजुकी सियाज से होगा। 1.2L टर्बो 3-सिलेंडर पेट्रोल इंजन को 6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा जाएगा और एक AT बाद में लाइनअप में शामिल हो सकता है।

Kia EV9 इन खूबियों के साथ भारत में मारेगी एंट्री, अगले साल लॉन्च होगी ये 7-सीटर इलेक्ट्रिक कार

Kia ने पुष्टि की है कि उसकी थ्री-रो वाली इलेक्ट्रिक एसयूवी Kia EV9 अगले साल 2024 में भारतीय बाजार में एंट्री करेगी। EV9 और EV6 के बाद ये कोरियाई ब्रांड की दूसरी इलेक्ट्रिक कार बन जाएगी और मास सेगमेंट में पहली तीन-रो EV भी होगी। किआ ने कहा कि EV9 भारत में पैसेंजर ईवी सेगमेंट में लगभग 15 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल करने के अपने लक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

नई दिल्ली। कोरियाई ऑटो दिग्गज Kia ने पुष्टि की है कि उसकी थ्री-रो वाली इलेक्ट्रिक एसयूवी Kia EV9 अगले साल 2024 में भारतीय बाजार में एंट्री करेगी। कंपनी ने अगले साल के लिए अपनी भारत की योजनाओं का खुलासा करते हुए कहा है कि EV9 इलेक्ट्रिक कार को नई पीढ़ी की कार्निवल के साथ भारत में लॉन्च किया जाएगा।

Kia EV9 कब होगी लॉन्च?

Kia EV9 इलेक्ट्रिक एसयूवी को इससे पहले जनवरी में आयोजित ऑटो एक्सपो के दौरान कॉन्सेप्ट फॉर्म में भारत में प्रदर्शित किया गया था। बाद में इसे किआ के डोमेस्टिक बेस सहित कुछ वैश्विक बाजारों में लॉन्च किया गया। किआ ने पहले कहा था कि वह 2025 तक भारत में EV9 लॉन्च करेगी। कार निर्माता ने कहा था कि वह अगले तीन वर्षों में तीन नए मॉडल लॉन्च करने की योजना बना रही है, जिसमें दो नए इलेक्ट्रिक वाहन भी शामिल हैं।

कंपनी का फ्यूचर प्लान

किआ ने पिछले साल भारत में अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार EV6 लॉन्च की थी। अब ब्रांड का लक्ष्य अधिक पेशकशों के साथ ईवी सेगमेंट में अपनी स्थिति मजबूत करना है। समाचार एजेंसी पीटीआई ने किआ इंडिया के प्रबंध निदेशक और सीईओ ताए-जिन पार्क के हवाले से कहा, ₹2025 में हम बड़े पैमाने पर ईवी का स्थानीय उत्पादन शुरू करेंगे और फिर हर साल हम इलेक्ट्रिक मॉडल पेश करते रहेंगे।

Kia EV9 में क्या खास?

Kia EV9 इलेक्ट्रिक ग्लोबल मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म (E-GMP) पर आधारित होगी, जो कार निर्माता की पहली इलेक्ट्रिक कार EV6 पर भी आधारित है। आपको बता दें कि EV9 की लंबाई 5 मीटर है। ये 6 या 7-सीट कॉन्फिगरेशन में उपलब्ध होगी और ये दो वेरिएंट-एचटी लाइन और जीटी लाइन में पेश की जाएगी।

किआ के मुताबिक EV9 सिंगल चार्ज में 541 किलोमीटर तक की रेंज देगी। वहीं ये 150 किलोवाट की इलेक्ट्रिक मोटर के साथ 9.4 सेकंड में 0-100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकती है। Kia EV9 का RWD वर्जन होगा, जो ज्यादा पावरफुल 160 किलोवाट इलेक्ट्रिक मोटर के साथ आएगा। ईवी में 800 वोल्ट का इलेक्ट्रिकल आर्किटेक्चर है, जो ईवी को अल्ट्रा-फास्ट स्पीड से चार्ज करने में सक्षम बनाता है। किआ का दावा है कि EV9 सिर्फ 15 मिनट की चार्जिंग में 239 किलोमीटर चल सकती है।

युवा बनाएंगे विकसित भारत

डा. जयंती लाल भंडारी

विकसित देश बनने के लिए 2047 तक लगातार करीब 7 से 8 फीसदी की दर से बढना होगा। हम उम्मीद करें कि जिस तरह 11 और 12 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के अमृतकाल में नई पीढ़ी को विकास के लिए लंबी छलांग लगाने के जो मंत्र सौंपे हैं, उनके मद्देनजर देश के युवा और शासन-प्रशासन समन्वित रूप से दुनिया में सामथ्र यवान भारत की तस्वीर बनाते हुए आगे बढेंग़े और वर्ष 2047 तक देश विकसित देश के रूप में रेखांकित होता हुआ दिखाई देगा'

12 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और वैश्विक साझेदारी' (जीपीएआई) पर शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि एआई 21वीं सदी में विकास का सबसे बड़ा जरिया बन सकती है। ऐसे में भारतीय युवाओं में शीघ्र ही एआई कम्प्यूटरिंग क्षमता को बढ़ाने का व्यापक अभियान शुरू किया जाएगा, जिसके तहत देशभर में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के मौजूदा नेटवर्क का इस्तेमाल टीयर 2 और टीयर 3 शहरों में युवाओं को एआई कौशल सिखाने में भी होगा। इससे देश की नई पीढ़ी स्टार्टअप और नवाचार को बढ़ाते हुए मानवीय मूल्यों के साथ देश के तेज विकास के लिए आगे बढ़ेगी। इसी तरह 11 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के राजभवनों में आयोजित 'विकसित भारत / 2047 : युवाओं की आवाज कार्यक्रम' को वर्चुअली संबोधित करते हुए युवाओं को संदेश दिया कि यह भारत का अमृतकाल है और भारत के इतिहास का ऐसा कालखंड है जब देश की नई पीढ़ी राष्ट्र निर्माण के संकल्प को मुठ्ठी में लेकर लंबी छलांगे लगाते हुए 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने के सपने को साकार कर सकती है। गौरतलब है कि नीति आयोग की ओर से 10 दिसंबर को देश के विकास पर एक परिपत्र जारी करते हुए कहा गया है कि केंद्र सरकार की ओर से जिस तरह प्रधानमंत्री कौशल विकास, समग्र शिक्षा, जनधन योजना, स्टार्टअप इंडिया और उच्च व तकनीकी शिक्षा के विस्तार कार्यक्रम सफलतापूर्वक आगे बढ़ाए गए हैं, उनसे भारत डिजिटल कौशल से सुसज्जित नई पीढ़ी और तेज आर्थिक विकास के दम पर 2027 में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था और 2047 में 30 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनते हुए विकसित देश बनते हुए दिखाई दे सकेगा।

यकीनन इन दिनों प्रकाशित हो रही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों में एकमत से डिजिटल कौशल और तेज आर्थिक विकास के कारण युवाओं के लिए देश और विदेश में रोजगार के मौके बढने और वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच भारत के तेजी से विकास की ओर बढ़ रही डगर रेखांकित हो रही है। जहां देश अपने पास दुनिया की सर्वाधिक 6.5 फीसदी विकास दर रखते हुए रोजगार के नए अवसर निर्मित करते हुए दिखाई दे रहा है, वहीं तेजी से बढ़ती देश की अर्थव्यवस्था की अहमियत को समझते हुए दुनिया के उद्यमियों और प्रवासी भारतीयों के कदम भी भारत की ओर बढ़ रहे हैं। हाल ही में सिंगापुर फिनटेक फेस्टिवल में हिस्सा लेते हुए उद्योग संगठन नैस्कॉम के पूर्व चेयरमैन सौरभ श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और देश की विकास गाथा में शामिल होने के लिए अमेरिका और यूरोप सहित दुनिया भर से भारतीय उद्यमी वापस अपनी मातृभूमि की ओर लौट रहे हैं। उल्लेखनीय है कि हाल ही में ब्रिटेन के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारतीय कुशल श्रमिकों, डॉक्टरों और छात्रों ने ब्रिटेन की वीजा सूची में अपनी ऊंचाई कायम रखी है। जुलाई 2022 से जून 2023 के एक वर्ष में सबसे ज्यादा भारतीयों को ही ब्रिटेन का वीजा मिला है। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2021 से 2022 के बीच भारतीयों को स्किल्ड वर्कर्स वीजा में करीब 63 फीसदी की बढ़ोतरी उभरकर सामने आई है। स्किल्ड वर्कर्स वीजा स्कीम के तहत विदेशों से आईटी इंजीनियर, सॉफ्टवेयर डेवलपर विभिन्न ब्रांचों के इंजीनियर, नर्स, फार्मासिस्ट, केयर टेकर आदि शामिल हैं। आगामी चार वर्षों तक ब्रिटेन में स्किल्ड वर्कर्स की मांग तेजी से बढ़ेगी। इसी तरह हाल ही में प्रकाशित ब्लूमबर्ग की नई रोजगार रिपोर्ट के मुताबिक इजरायल सरकार ने एक लाख भारतीय युवाओं को इजराइल में नौकरी के लिए भारत सरकार से अनुमति मांगी है। इसी तरह भारत और ताइवान के बीच नौकरियों को लेकर एक अहम समझौता अतिशीघ्र ही होने की उम्मीद है। इस समझौते के तहत ताइवान में भारत के एक लाख श्रमिकों को नौकरी मिलेगी।

दरअसल ताइवान में बेरोजगारी दर न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई है। उसे मैन्युफैक्चरिंग, स्वास्थ्य और कृषि क्षेत्र में बड़ी संख्या में श्रमिकों की जरूरत है, जो उसे अपने देश में नहीं मिल रहे हैं। ऐसे में ताइवान ने इस परिप्रेक्ष्य में भारत की तरफ समझौते के हाथ बढ़ाए हैं। ज्ञातव्य है कि श्रमिकों की मोबिलिटी को लेकर भारत का जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस समेत 13 देशों के साथ समझौता हो चुका है। इनमें से ज्यादातर देश आबादी के बूढ़े होने की समस्या से कौशल प्रशिक्षित नई पीढ़ी के श्रमिकों की भारी कमी का सामना कर रहे हैं। इन दिनों पूरी दुनिया में अर्थविशेषज्ञ एवं जनसंख्या विशेषज्ञ यह टिप्पणी करते हुए दिखाई दे रहे हैं कि सर्वाधिक युवा आबादी वाला भारत चीन की तरह अपनी युवा आबादी को गुणवत्तापूर्ण एवं नए दौर के डिजिटल कौशल से सुसज्जित कर दुनिया की नई आर्थिक शक्ति बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक एक अरब 42 करोड़ 86 लाख आबादी के साथ भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन गया है। जबकि दूसरे स्थान पर चीन की इस रिपोर्ट के मुताबिक युवा आबादी के मामले में भारत की स्थिति चीन से अच्छी है। जहां इस समय भारत की करीब 50 फीसदी आबादी 25 साल में कम उम्र की है, वहीं 25.4 करोड़ आबादी 15 से 24 वर्ष के आयु वर्ग में है। भारत की 66 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम उम्र की है। यूएनएफपीए की भारत में प्रतिनिधि आंद्रिया वोजनार ने कहा कि भारत के 1.4 अरब से अधिक नागरिकों को 1.4 अरब से अधिक अवसरों के रूप में देखा जाना चाहिए। सबसे अधिक युवाओं वाला देश नवोन्मेष, नवाचार और समस्याओं के हल खोजने का स्रोत बन सकता है। ऐसे में नई पीढ़ी को देश और दुनिया में बढ़ती हुई रोजगार की नई संभावनाओं के मद्देनजर अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आईटी दक्षता, कोडिंग स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कौशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अब देश में स्किल इंडिया डिजिटल से कौशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे। साथ ही देश में इस वर्ष 2023-24 से शुरू प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 के माध्यम से देश के युवाओं को निर्धारित किए गए तकनीक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कौशल और प्रशिक्षण से सुसज्जित करके रोजगार की डगर पर आगे बढ़ाना होगा। निश्चित रूप से भारत के ये आर्थिक आधार विकसित भारत की संभावनाओं के आधार हैं। विकसित देश बनने के लिए 2047 तक लगातार करीब 7 से 8 फीसदी की दर से बढना होगा। हम उम्मीद करें कि जिस तरह 11 और 12 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के अमृतकाल में नई पीढ़ी को विकास के लिए लंबी छलांग लगाने के जो मंत्र सौंपे हैं, उनके मद्देनजर देश के युवा और शासन-प्रशासन समन्वित रूप से दुनिया में सामथ्र्यवान भारत की तस्वीर बनाते हुए आगे बढेंग़े और वर्ष 2047 तक देश विकसित देश के रूप में रेखांकित होता हुआ दिखाई देगा।

संपादक की कलम से

राम के भरोसे आम चुनाव

वर्ष 2024 के आम चुनाव के मद्देनजर, अयोध्या के राम मंदिर पर, भाजपा ही नहीं, बल्कि आरएसएस और विहिप ने भी एक 'मास्टर प्लान' तैयार किया है। लोकसभा चुनाव में भाजपा का लक्ष्य 51 फीसदी वोट हासिल करने का है, ताकि लगातार तीसरी बार सत्ता मिल सके। इस संदर्भ में अयोध्या का निर्माणाधीन राम मंदिर एक बड़ा चुनावी मुद्दा साबित हो सकता है। इस 'मास्टर प्लान' पर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और भाजपा अध्यक्ष ने पार्टी पदाधिकारियों के साथ अलग से विमर्श किया है। प्रधानमंत्री मोदी 22 जनवरी को रामलला की मूर्ति के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का उद्घाटन करेंगे और भाजपा कार्यकर्ता गांव-गांव, घर-घर जाकर उस पावन कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जन-जन के लिए जीवंत करेंगे। यह अभियान 1 जनवरी, 2024 से आरंभ किया जाएगा। भाजपा और संघ परिवार 15 जनवरी तक करीब 12 करोड़ परिवारों के 60 करोड़ लोगों से संपर्क करेंगे। उन्हें भगवान राम का चित्र और जन्मभूमि पर पूजित अक्षत (चावल) देंगे। उन्हें 22 जनवरी के समारोह को सामूहिक रूप से देखने, भजन और भोग का न्योता दिया जाएगा। विहिप ने 22 जनवरी को देश के 5 लाख गांवों के मंदिरों, धार्मिक या सार्वजनिक स्थलों में भी आयोजन का लक्ष्य तय किया है। दरअसल भाजपा और संघ परिवार की यह पूरी कवायद 'हिंदूवादी' है। उनका मानना है कि जिस तरह पालमपुर राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सबसे पहले राम मंदिर का प्रस्ताव पारित किया गया था और उसके बाद कमोबेश उत्तरी, हिंदी पट्टी का भारत 'राममय' हो उठा था, उससे भी अधिक धुरवीकरण अब होगा, क्योंकि राम मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा हो चुकी होगी। यानी साक्षात प्रभु राम का भव्य मंदिर आकार ले रहा है।

एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक लक्ष्य संपूर्ण हो रहा है। प्रधानमंत्री मोदी 30 दिसंबर को अयोध्या जाएंगे और 3000 करोड़ रुपए की परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। उसी के साथ पूरी हो चुकी 23 परियोजनाएं अयोध्या की प्रजा को सौंपेंगे। भाजपा और संघ परिवार कुछ भी दलीलें दें, लेकिन 2024 का आम चुनाव प्रभु राम के भरोसे ही लड़ा जाएगा। भाजपा के लिए 50 फीसदी वोट हासिल करना टेढ़ी खीर है, लेकिन 350 या 400 सीटें जीतने का लक्ष्य तय किया गया है, तो भाजपा को एनडीए के साथ, 340-50 सीटें जीतना मुश्किल नहीं होना चाहिए। भाजपा उप्र, मप्र, छत्तीसगढ़, गुजरात और राजस्थान आदि राज्यों में 50-62 फीसदी वोट हासिल कर चुकी है, लेकिन बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु और केरल, पंजाब, दिल्ली सरीखे राज्यों में भाजपा कितनी सीटें जीत पाएगी, यह अब भी अहम सवाल है। इन राज्यों में राम मंदिर का अपेक्षाकृत कम असर होता है, लिहाजा हिंदूवादी धुरवीकरण भी उतना नहीं होता। फिर भी भाजपा नेतृत्व ने 324 सीटें जीतना तो गारंटी माना है। वह किस आधार पर संभव है? भाजपा के मुकाबले एक-एक सीट पर, एक साझा उम्मीदवार उतारने की 'इंडिया' की रणनीति अभी तक कारगर नहीं हो सकी है। उससे पहले ही भाजपा और संघ परिवार ने अपना 'मास्टर प्लान' पेश कर दिया है कि राम मंदिर के जरिए 2024 के जनादेश तक पहुंचना आसान होगा, लिहाजा उसे 'श्रीरामोत्सव' के तौर पर मनाना तय किया गया है। देश में बेरोजगारी, महंगाई, प्रति व्यक्ति आय, देश पर बढ़ता कर्ज आदि ऐसी राष्ट्रीय समस्याएं हैं, जिनसे आम आदमी संतप्त और प्रभावित हो रहा है। क्या इन मुद्दों पर आम चुनाव की दशा और दिशा जरा-सी भी तय नहीं होगी? राम मंदिर ने 1990 के दशक की शुरुआत में दो चुनाव जरूर जीते थे, लेकिन उसके बाद उप्र में ही वह पराजित होने लगी थी। 2019 के आम चुनाव में 224 सीटों पर भाजपा को 50 फीसदी या उससे अधिक वोट मिले थे। चुनाव उसी तर्ज पर होगा, यह निश्चित नहीं है, लेकिन भाजपा राम मंदिर को एक भावुक, हिंदू अस्मिता का मुद्दा बना देना चाहती है।

राय

तपोवन का किरदार

इस सत्र की याद में कई चिराग जलते रहेंगे, तेरे हाथ की मशाल में इतनी तो रोशनी रही। तपोवन विधानसभा का शीतकालीन सत्र तपा जरूर, लेकिन इसके भीतर और बाहर के मजमून स्वतंत्र रहे और समय का बंटवारा भी निभाता रहा अपना दायित्व। दायित्व विपक्षका अपने जुनून के किरदार में कई अक्स और कई पक्ष लिए, सरकार को घेरता और मुद्दों को पेलता रहा, लेकिन पहली बार एक छोटे से सत्र ने काम किया। जनापेक्षाओं के साथ, गारंटियों के हाथ और सरकार के करार को देखते-सुनते गुजर गया एक और शीतकालीन सत्र, लेकिन पक्ष और विपक्ष के किरदार ने अपने-अपने पाठ्यक्रम के बीच आवश्यक काम किया। पांच दिन की भीड़, कहने-सुनने के लिए 471 प्रश्न और कार्यान्वयन की दृष्टि में विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया की भूमिका का जोरदार प्रदर्शन देखा गया। सत्र में एक ओर गारंटियों में आपदा देखती भाजपा और दूसरी ओर आपदा में गारंटियों को सहेजती कांग्रेस का बचाव खुद को संवारता रहा है। सरकार ने अपनी व्यवस्था परिवर्तन की पारी को मुखातिब किया और खुद को स्थापित करने की कोशिश में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अपनी शासन प्रणाली का वक्तव्य दिया तो नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने समूचे विपक्ष को अपने कंधे पर उठा लिया। विधानसभा सदन के बाहर भाजपा ने गारंटियों का चोला पहनकर या सेब की पेटी उठाकर अगर विरोध किया, तो भीतर हर बहस को मुकाम तक पहुंचाने का दबाव बनाया। पहली बार बहिर्गमन पर सत्र सजायफ्ता नहीं हुआ और न ही वाकआउट की अनुगूंज ने माहौल के कान बिगाड़े। यह दीगर है कि सदन के बाहर विपक्ष की बोली में कई आंदोलनकारी भी पहुंचे। सत्ता अगर चाहे तो तपोवन का सत्र केवल सदन का आंतरिक वृत्तांत नहीं, बल्कि प्रदेश की मनोस्थिति का वर्णन भी है, जहां इसके बहाने विभिन्न वर्ग, विभिन्न मुद्दे और कर्मचारी मसले शिरकत करते हुए धर्मशाला पहुंच जाते हैं। इन्हीं मसलों के बीच से इस बार केंद्रीय विश्वविद्यालय के जदरांगल परिसर ने अपनी शिकायतों का मजमा खड़ा किया। विश्वविद्यालय के जदरांगल परिसर की तमाम अनुभूतियों के बावजूद सरकार को महज तीस करोड़ जमा कर ढाई सौ करोड़ के निर्माण का श्रीगणेश करना है। यह क्यों नहीं हो रहा, जबकि देहरा की मुनादी में विश्वविद्यालय का परिसर रात-दिन मेहनत करके हमीरपुर के सांसद एवं केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर का गुणगान कर रहा है। हैरानी यह है कि कांग्रेस की पूर्व सरकार से भिन्न इस बार की कुंडली में इसी पार्टी का पांव फंसा है। विधानसभा सत्र का अंतिम दिन पूरे प्रदेश पर भारी पड़ा है। उस दिन हिमाचल का आर्थिक सामथ्र्य फिर घायल-अपाहिज दिखा तो इसलिए कि सामने कैग रिपोर्ट का सत्य तमाम सरकारों की बांसुरियां तोड़ रहा है। आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपया। कैग रिपोर्ट बता गई कि प्रदेश की धमनियों में 86589 करोड़ का कर्ज घूम रहा है। पिछले एक वर्ष में 13055 करोड़ का नया उधार सिर पर सवार हो गया, तो यह छठे वेतन आयोग की सिफारिशों का असर भी है जो हर वर्ष सात हजार करोड़ का अतिरिक्त बोझ पैदा कर रही हैं। इसी मद में ओपीएस भी आने वाले समय में आर्थिक दैत्य बनकर सताएगा। सरकार पर गारंटियों का बोझ धीरे-धीरे पंजा जमाने लगा है और जिनका मूल्य राज्य चुका कर, कई अन्य क्षेत्रों में असमर्थता व्यक्त करेगा। अगर ढाई सौ करोड़ के जदरांगल परिसर के निर्माण पर तीस करोड़ की अदायगी भारी है, तो आइंदा ऐसी ही विकरालता से विकास भयभीत रहेगा। विडंबना यह है कि प्रदेश के पचास फीसदी बजट का होम कर्मचारी वेतन, पेंशन और भत्तों पर होगा। साढ़े चार लाख के करीब सरकारी कर्मचारी और पेंशनधारक अगर गुलकंद खा रहे हैं, तो निजी क्षेत्र के करीब पच्चीस लाख कर्मचारी, व्यापारी व निवेशक अपनी खुशहाली के लिए लड़ख़ड़ा रहे हैं। ऐसे में एक विशेष सत्र आहूत करके प्रदेश की आर्थिक हालत पर समग्रता के साथ चर्चा व राजनीतिक सहमति के साथ कड़े कदम उठाने की जरूरत है।

शव संवाद-23

बुद्धिजीवी के स्थायी भ्रम बुद्धि को लेकर ही होते हैं और वह इन्हीं के बीच जिंदगी गुजार देता है। इस बार वह अपनी जिंदगी को सामने रखी हुई दवाई की गोलियों के बीच समझने लगा। पहली बार उसने देखा कि तरह-तरह गोलियां एक-दूसरे पर भारी पड़ रही हैं। सबसे ज्यादा हृदय रोग की दवाई उछल रही थी। तभी उसने सुना, एक गोली कह रही थी, 'मैं सुबह देखती हूं। मेरे साथ ही मरीज सुबह देखता है।' दूसरी ने जवाब दिया, 'नाश्ता और दोपहर का खाना अब मेरे बिना कौन खा सकता है।' तीसरी आंखें फाड़ कर बोली, 'मरीज को सुलाने, सपनों और परिवार के झंझट से दूर रखने में इक मैं ही सहारा हूं।' तभी हृदय रोग की गोली मुस्कराई, 'कर लो मेहनत। आज और कल के बीच अब लोगों को मेरे बिना अपने दिल पर भी कहां भरोसा। मैं ही अब हर दिल की महारानी हूं।' ये सब बाजार से आई हुई दवाइयां थीं जो उछल रही थीं, जबकि सामने सरकारी मुफ्त की दवाइयां एकदम शांत, मरीज से भी बुरी हालत में, आत्मशक्ति-भरोसे से दूर, असहाय और नाउम्मीद जैसी मुरझाई हुईं। मुफ्त में बंटती दवाई और घर जंवाई की एक जैसी हालत होती है। दोनों को ही अपनी काबिलीयत पर शक है। इतना ही नहीं, दोनों को वे भी संदेह से देखते हैं जो इनका उपयोग या प्रयोग कर रहे होते हैं। अब बुद्धिजीवी को भी अपनी आंखों पर संदेह हो रहा था, क्योंकि सरकारी अस्पताल की दवाई से ही वह भी देख रहा था। उसी के सामने हृदय रोग की गोली जोर-जोर से उछलने लगी थी। वैसे बुद्धिजीवी ने जिंदगी में कई उछलती हुई चीजें, अवसर और लोग देखे हैं, लेकिन उसके करीब आकर कुछ भी उछल न पाया। उसकी अपनी मैरिट से पाई हुई डिग्री आज तक उछल न पाई। नौकरी मिली भी, तो वहीं की वहीं रही- कभी उछल न पाई।

घरवालों ने जैसे-तैसे शादी कर दी, जो कभी उछल न पाई। नतीजतन अब दवाइयां उछल-उछल कर उससे ही मुकाबला कर रही हैं, वह सुन रहा है, 'अबे तू, हमारी वजह से जिंदा है, वरना तेरी क्या औकात कि दाल-भात भी ठीक से खा-चबा सके।' अब तो बुद्धिजीवी को लगने लगा है कि कहीं दवाई निर्माता ने उसका दिल, दिल की गोली में ही न डाल दिया हो। उसका यह संदेह निराधार नहीं। बाजार में हर कोई दवाई ही तो ढूंढ रहा है। कोई ऐसी खोई हुई दवाई जो कभी मिल जाए और इनसान कह सके, 'अब मैं स्वस्थ हूं।' वरना जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती जाएगी, गोली का व्यवहार भी बदलता जाएगा। हर गोली का अलग-अलग व्यवहार, फिर भी मरीज से डाक्टर की यही अपेक्षा कि वह अपना व्यवहार ठीक रखे। बुद्धिजीवी संयम से गोलियों को निहारता, पुचकारता, सुबह से शाम तक बार-बार उनके बारे में जानकारी खंगालता, जैसे अब भी दवाई बाजार नहीं, भगवान हो। कभी कभी सोचता, इनका उछलना भी शुभ है, क्योंकि उसके मरते ही ये भी उछलना भूल जाएंगी। बुद्धिजीवी ने अंतत: दवाई रूपी गोली का मनोविज्ञान पढ़ना शुरू कर दिया, 'आखिर वह भी तो तड़पती होगी जब मुफ्त में किसी के शरीर में मरती होगी। इनसान के शरीर से गुजरना क्या होता है, यह कोई गोली ही बता सकती है।'

बुद्धिजीवी आदतन संवाद प्रेमी रहा और इस बार हृदय रोग की गोली से ही पूछ बैठा कि उसकी सांस क्यों उखड़ी है। उछल कर गोली बोली, 'मुझे तुझ जैसे बुद्धिजीवी पर भरोसा नहीं। भाई तू है किस मिट्टी का। तेरे दिल पर हर कोई चोट कर रहा है, फिर भी तू मुझ पर भरोसा नहीं कर रहा। सच कहूं मैं किसी बुद्धिजीवी के इलाज के लिए बनी ही नहीं, इसलिए तुझ से मेरा दिल घबरा रहा है।' उस दिन गोली वाकई बुद्धिजीवी के नैतिक मूल्यों के सामने मर गई। बुद्धिजीवी नहीं चाहता था कि इस तरह गोलियां मरें। वह अभी सोच ही रहा था कि गोली को कहां जलाऊं या दफनाऊं, कि तभी अम्मा की आवाज आ गई, 'मेरी दिल की गोली कहां रखी है।' उसके कदम ठिठक गए, वह मरी हुई गोली मां को नहीं देना चाहता था, लेकिन मां के भरोसे को तोड़ना नहीं चाहता था जो हर गोली को भगवान मानती हुई जिंदा है।

-क्रमश:

निर्मल असो

विचार

दिव्य रत्न, जो सदैव 'अटल' रहा

विरोधियों को साथ लेकर चलने की कला ने उनको सबसे अलग बना दिया। अटल बिहारी वाजपेयी को एक ऐसे नेता के तौर पर याद किया जाएगा जिन्होंने विपरीत विचारधारा के लोगों को भी साथ लिया और गठबंधन सरकार बनाई। वह विपक्ष की आलोचना के साथ अपनी आलोचना सुनते थे'

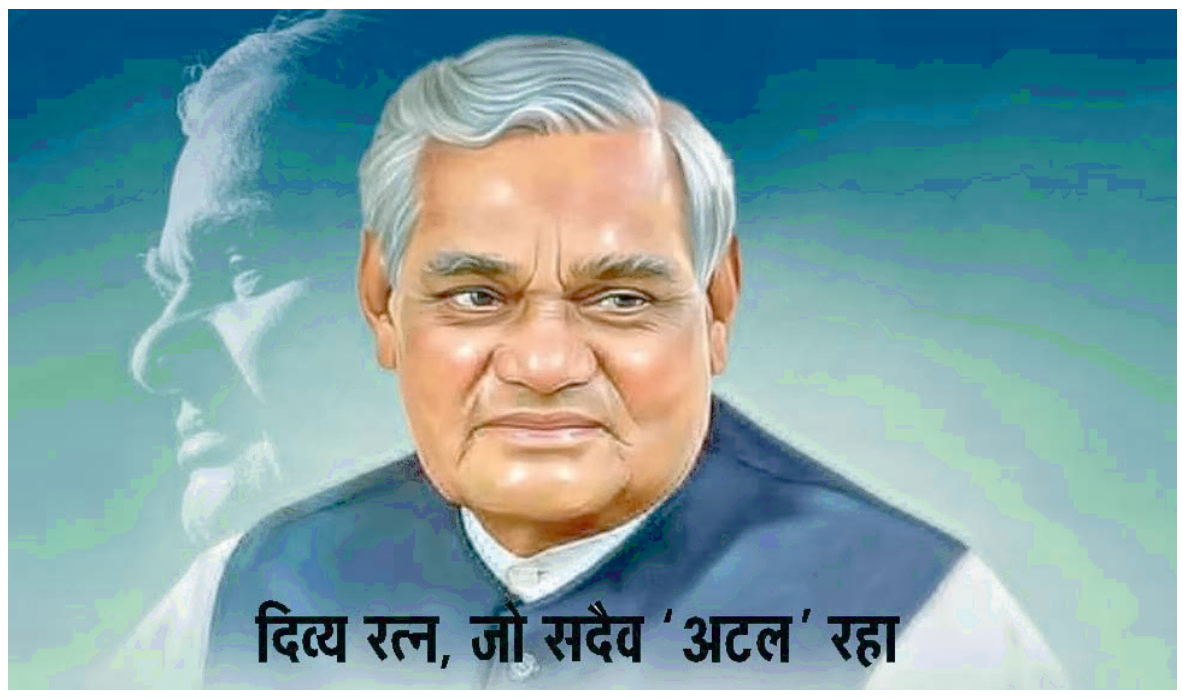

भारत देश का एक ऐसा दिव्य रत्न जो सदैव 'अटल' ही रहा, चाहे परिस्थितियां अनुकूल हों या प्रतिकूल। यह रत्न रूपी शख्सियत कोई अन्य नहीं, बल्कि भारत रत्न, देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। सदैव अपने शब्दों की भांति स्पष्ट और सरल होने के बावजूद सदैव अटल रहे। अपने शब्दों व रचना से एक ऐसा सफर शुरू किया कि यह सफर निरंतर चलता ही रहा और आज भी अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्दों व उनकी कही बातों या भाषणों के रूप में यह सफर निरंतर गति पर अग्रसर है, आज वो अपनी कही बातों से जीवंत हैं। वाजपेयी जी अपने शब्दों की भांति ही सदैव स्पष्ट रहते थे, चाहे एक कवि के रूप में हों, पत्रकार के रूप में या रणनीतिकार हों या चाहे एक प्रधानमंत्री के रूप में ही क्यों न हों। स्पष्टता व ईमानदारी के प्रतीक थे अटल बिहारी वाजपेयी जी जिन्हें आज भी पूरा समाज उनके शब्दों व कविताओं के माध्यम से याद करता है, उनके संसद में दिए उन भाषणों को स्मरण करता है जिन भाषणों में उन्होंने संसद के सत्र में स्पष्ट कहा था कि 'सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी, मगर यह देश रहना चाहिए।'

उनकी देश व लोगों के प्रति यह जिंदादिली ही उन्हें अविस्मरणीय अध्याय में स्थापित कर देती है। तीन बार देश के प्रधानमंत्री रहे वाजपेयी जी को सारा देश जयंती पर नमन करता आया है। अटल जी नीति-सिद्धांत, विचार एवं व्यवहार की सर्वोच्च चोटी पर रहते हुए सदैव जमीन से जुड़े रहने वाले नेता रहे। उन्होंने राजनीति में कभी छोटे मन से काम नहीं किया। अटल जी ने देश सेवा के दौरान जो दिया, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। जब तक तन में ऊर्जा बची रही, तब तक वे सेवारत रहे। कत्र्तव्य पथ पर चलते-चलते अटल जी अब थकने लगे थे। 93 वर्ष की आयु में आखिरकार 16 अगस्त 2018 को उनका देहावसान हो गया। उनकी याद में 'सदैव अटल' नाम से स्मृति स्थल का निर्माण किया गया। अटल जी दूरदर्शी राजनेता, ओजस्वी वक्ता, विद्वान साहित्यकार, राष्ट्रवादी संवेदनशील कवि तथा प्रखर सांसद रहे। अटल जी ने अपना सारा जीवन राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने सुशासन के प्रामाणिक मानदंड स्थापित किए। उनका राष्ट्र निर्माण में योगदान सदैव आदरपूर्वक याद किया जाएगा। एक प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयी जी के महान कार्यों व उनकी नेतृत्व क्षमता का सभी लोहा मानते हैं। विषम से विषम परिस्थितियों का भी उन्होंने बड़ी ही सहजता व धैर्य के साथ सामना किया। विश्व शांति के उनके प्रयासों के लिए आज समूचा विश्व उनकी सराहना करता है। विश्व से आतंकवाद मिटाने हेतु उनके द्वारा उठाए गए कदम प्रशंसनीय हैं। उन्होंने सभी पड़ोसी देशों से अपने संबंध सुधारने का प्रयास किया। वे परस्पर मिल-बैठकर आपसी सहमति से विषम समस्याओं का समाधान करने के हामी रहे हैं। उनका यही उदारवादी दृष्टिकोण उनके महान मानवीय पक्ष को उजागर करता है।

उनसे जुड़े हर एक किस्से व निर्णय से उनकी झलक महसूस होती है। पत्रकार से लेकर प्रखर वक्ता, कवि, नेता, उनकी राजनीतिक सूझबूझ अटल बिहारी वाजपेयी की ऐसी अमिट छवि बनी जो कभी धूमिल नहीं हुई, जिसे सिर्फ उनके दौर के लोग ही नहीं बल्कि पीढियां याद करती आई और करती रहेंगी। अपने फैसलों से सबको चौंकाने वाले निडर नेता थे हमारे अटल बिहारी वाजपेयी। भारत की आधुनिक राजनीति में नैतिकता व आदर्श तथा सिद्धांतों को प्रमुखता देकर स्थापित करने वाले अटल जी का राष्ट्र के प्रति योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। अटल जी आज भी लोगों के दिलों में उनके विचारों के माध्यम से जीवंत हैं। नमन है ऐसी शख्सियत को जिन्होंने भारत की राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया। आज या अवसर दिवस विशेष पर केवल उन्हें उनकी पुण्यतिथि या जयंती पर स्मरण करके पुष्पांजलि अर्पित करने से बेहतर है उनके विचारों पर आगे बढें। भारतीय राजनीति के अपराधीकरण को रोकने में उनके विचार अमृत मूल हैं। उनके दिखाए मार्ग व विचारों पर चलकर ही उनको सही मायने में आज जयंती अवसर पर सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। भारत में सुशासन की बात हो या दृढ़ निर्णयों की बात हो, पहला नाम अटल बिहारी वाजपेयी जी का ही आता है, चाहे वो परमाणु परीक्षण ही क्यों न हो। वाजपेयी भले ही हमें छोडक़र चिरनिद्रा में लीन हो गए हों, लेकिन उनकी वाणी, उनका जीवन दर्शन सभी भारतवासियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। उनका ओजस्वी, तेजस्वी और यशस्वी व्यक्तित्व सदा देश के लोगों का मार्गदर्शन करता रहेगा। उदारवादी व्यक्तित्व के धनी अटल बिहारी वाजपेयी ने खुद को किसी खास विचारधारा के पहरेदार के रूप में स्थापित नहीं होने दिया। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में कश्मीर से लेकर पाकिस्तान तक से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ था। अलगाववादियों से बातचीत के फैसले पर सवाल उठा कि क्या बातचीत संविधान के दायरे में होगी, तो उनका जवाब था, इनसानियत के दायरे में होगी।

विरोधियों को साथ लेकर चलने की कला ने उनको सबसे अलग बना दिया। अटल बिहारी वाजपेयी को एक ऐसे नेता के तौर पर याद किया जाएगा जिन्होंने विपरीत विचारधारा के लोगों को भी साथ लिया और गठबंधन सरकार बनाई। विपक्षी पार्टियों के नेताओं की वह आलोचना तो करते ही थे, साथ ही अपनी आलोचना सुनने का भी साहस रखते थे। ऐसे में विरोधी भी उनकी बात को बड़ी तल्लीनता से सुनते थे। उनका हिंदी प्रेम इतना अधिक था कि अपने भाषणों में वे ऐसे वाक्य-शब्द बोलते थे जोकि दिल को छू जाते थे। अटल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी को विश्वस्तर पर मान दिलाने के लिए काफी प्रयास किए। वह 1977 में जनता सरकार में विदेश मंत्री थे। संयुक्त राष्ट्र संघ में उनके द्वारा दिया गया हिंदी में भाषण उस समय काफी लोकप्रिय हुआ था। उनके द्वारा हिंदी के चुने हुए शब्दों का ही असर था कि यूएन के प्रतिनिधियों ने खड़े होकर वाजपेयी के लिए तालियां बजाई थीं। इसके बाद कई बार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अटल जी ने हिंदी में दुनिया को संबोधित किया। उन्हें शब्दों का जादूगर माना गया। विरोधी भी उनकी वाकपटुता और तर्कों के कायल रहे।

प्रो. मनोज डोगरा

हेल्थ इंश्योरेंस को सस्ता करने की तैयारी अंतरिम बजट में हो सकती है घोषणा

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार चाहती है कि हेल्थ इंश्योरेंस सबके पहुंच में हो और इस काम के लिए एक फरवरी को पेश होने वाले अंतरिम बजट में घोषणाएं भी हो सकती है। सरकार आयुष्मान भारत स्कीम के दायरे को बढ़ाया जा सकता है। वहीं स्कीम के तहत इंश्योरेंस राशि की सीमा भी बढ़ाई जा सकती है। स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ इस दिशा में काम किया जा रहा है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ इस दिशा में काम किया जा रहा है। आयुष्मान भारत स्कीम के तहत सालाना 2.5 लाख से कम आय वाले परिवार पांच लाख तक का इलाज मुफ्त में करा सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के मुताबिक 50 करोड़ लोगों के पास अब आयुष्मान भारत कार्ड नंबर है। लेकिन देश में अब भी 40 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनके पास किसी प्रकार का कोई हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है।

नई दिल्ली। सरकार चाहती है कि हेल्थ इंश्योरेंस सबके पहुंच में हो और इस काम के लिए एक फरवरी को पेश होने वाले अंतरिम बजट में घोषणाएं भी हो सकती है। आयुष्मान भारत स्कीम के दायरे को बढ़ाया जा सकता है। वहीं स्कीम के तहत इंश्योरेंस राशि की सीमा भी बढ़ाई जा सकती है।

हेल्थकेयर सेक्टर के लिए रेगुलेटर लाने की दिशा में भी कुछ घोषणाएं हो सकती है ताकि इंश्योरेंस प्रोग्राम के तहत अस्पतालों के शुल्क और उनके स्तर में बदलाव लाया जा सके। इस दिशा में वित्त मंत्रालय की तरफ की तरफ से पहल की गई है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ इस दिशा में काम किया जा रहा है। आयुष्मान भारत स्कीम के तहत सालाना 2.5 लाख से कम आय वाले परिवार पांच लाख तक का इलाज मुफ्त में करा सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के मुताबिक 50 करोड़ लोगों के पास अब आयुष्मान भारत कार्ड नंबर है। लेकिन देश में अब भी 40 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनके पास किसी प्रकार का कोई हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है।

हेल्थ इंश्योरेंस लेने की लागत इतनी अधिक होती है कि निम्न आय वर्ग वाले इसे आसानी से नहीं खरीद पाते हैं। निजी इंश्योरेंस कंपनियों से पांच लाख तक का हेल्थ इंश्योरेंस लेने पर सालाना 15-35 हजार रुपए तक की लागत आती है जो इंश्योरेंस लेने वाले की उम्र पर निर्भर करती है।

सूत्रों के मुताबिक सरकार आयुष्मान भारत स्कीम का दायरा बढ़ा सकती है। हो सकता है सालाना पांच लाख तक के आय वाले परिवार को आयुष्मान भारत स्कीम में शामिल कर लिया जाए। इसके लिए आगामी अंतरिम बजट में आयुष्मान भारत के मद में होने वाले आवंटन को बढ़ाया जा सकता है।

सूत्रों के मुताबिक सरकार आयुष्मान भारत के तहत पांच लाख के कवरेज की सीमा भी बढ़ा सकती है। जानकारों का कहना है कि पांच लाख की सीमा को सात-आठ लाख तक करने पर सरकार पर बहुत ही मामूली आर्थिक बोझ पड़ेगा। सरकार की कोशिश है कि हेल्थ सेक्टर रेगुलेटर के जरिए हेल्थ इंश्योरेंस की लागत को कम किया जाए और उसमें एकरूपता लाई जाए।

अभी सभी कंपनियों के हेल्थ इंश्योरेंस की कीमत या प्रीमियम अलग-अलग होती है। 24 घंटे अस्पताल में भर्ती होने पर ही इंश्योरेंस के लाभ नियम पर होगा विचार उपभोक्ता मामले का मंत्रालय हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ लेने के लिए कम से कम 24 घंटे अस्पताल में भर्ती रहने के नियम में बदलाव को लेकर वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग से बात करेगा। राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग ने इस नियम पर सवाल उठाया है।

आम चलन के मुताबिक किसी सर्जरी के लिए हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ कंपनियां कम से कम 24 घंटे भर्ती होने के बाद ही देती है। 24 घंटे से कम समय के लिए भर्ती होने पर इंश्योरेंस दावे को खारिज कर दिया जाता है। आयोग का मानना है कि अब टेक्नोलॉजी के विकास से कई सर्जरी में इतने समय तक भर्ती होने की जरूरत नहीं होती है।

वित्त वर्ष 2023 में छोटे और मझोले शेयरों ने कराई जमकर कमाई, BSE पर छाए रहे स्मॉलकैप

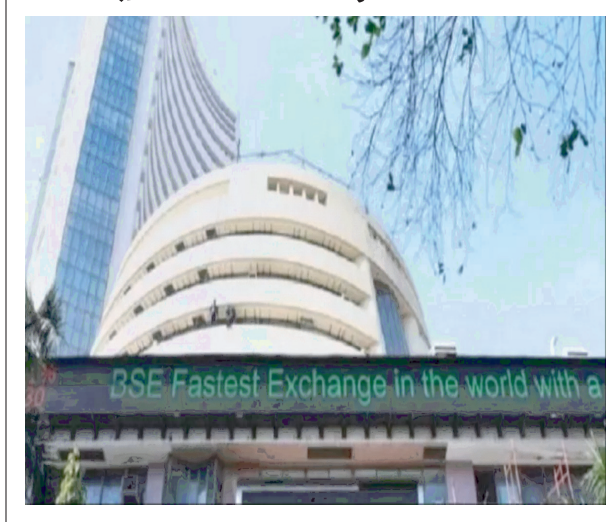

BSE का मिडकैप सूचकांक 10568 .22 अंक या 41 .74 प्रतिशत बढ़ा है। वहीं इनकी तुलना में बीएसई का प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 10266 .22 अंक या 16 .87 प्रतिशत बढ़ा है। 20 दिसंबर को बीएसई का स्मालकैप सूचकांक 42648 .86 अंक के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंचा था। आपको बता दें कि कंपनियों को बाजार पूंजीकरण के आधार पर स्माल मिड और लार्ज कैप सूचकांक में बांटा जाता है।

नई दिल्ली। व्यापक आर्थिक बुनियाद के चलते घरेलू शेयर बाजारों में 2023 के दौरान छोटे शेयर निवेशकों की पसंद बनकर उभरे हैं। इससे यह वर्ष इक्विटी के लिए काफी बेहतर रहा है। 2023 के दौरान छोटे शेयरों ने निवेशकों की जमकर कमाई कराई है। डाटा के अनुसार, इस वर्ष 22 दिसंबर तक बीएसई के स्मालकैप सूचकांक में 13,074.96 अंक या 45.20 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

बीएसई पर रहा दबदबा

बीएसई का मिडकैप सूचकांक 10,568.22 अंक या 41.74 प्रतिशत बढ़ा है। वहीं, इनकी तुलना में बीएसई का प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 10,266.22 अंक या 16.87 प्रतिशत बढ़ा है। 20 दिसंबर को बीएसई का स्मालकैप सूचकांक 42,648.86 अंक के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंचा था। इसी दिन मिडकैप सूचकांक 36,483.16 अंक और सेंसेक्स 71,913.07 अंक के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंचे थे।

क्या होते हैं स्माल, मिड और लार्ज कैप?

कंपनियों को बाजार पूंजीकरण के आधार पर स्माल, मिड और लार्ज कैप सूचकांक में बांटा जाता है। पांच हजार करोड़ से कम पूंजीकरण वाली कंपनियां स्मालकैप, पांच से 20 हजार करोड़ तक के पूंजीकरण वाली कंपनियां मिडकैप और 20 हजार करोड़ से ज्यादा पूंजीकरण वाली कंपनियां लार्जकैप सूचकांक में शामिल होती हैं। विश्लेषकों का कहना है कि सामान्य तौर पर छोटे शेयरों की खरीदारी स्थानीय निवेशक करते हैं, जबकि विदेशी निवेशक ब्लूचिप या बड़ी कंपनियों के शेयरों की खरीदारी करते हैं। 2023 में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआइ) भारतीय इक्विटी बाजारों में अब तक 1.62 लाख करोड़ रुपये का निवेश कर चुके हैं।

औद्योगिक घरानों व बैंकों के रिश्तों पर शीघ्र लागू होंगे नए नियम, RBI कर रहा है तैयारी

देश के केंद्रीय बैंक भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) बैंकों और कॉरपोरेट सेक्टर के बीच कारोबारी रिश्तों को लेकर कनेक्टेड लेंडिंग नियम लागू करने की तैयारी की है। इस नियम में पहले ड्राफ्ट सर्कुलर जारी किया जाएगा। कनेक्टेड लेंडिंग को लेकर ये नियम भविष्य में बैंकों और उनकी तरफ से दिए जाने वाले कर्ज की पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने का काम करेगा।

नई दिल्ली। बड़े कॉरपोरेट घरानों को बैंकिंग लाइसेंस देने का मामला अभी भले ही आरबीआई ने ठंडे बस्ते में डाल दिया हो लेकिन इस व्यवस्था को लंबे समय तक टाला नहीं जा सकता। आरबीआई ने हाल ही में जिस तरह से बैंकों और कॉरपोरेट सेक्टर के बीच कारोबारी रिश्तों को लेकर कुछ कदम उठाने के संकेत दिए हैं उसे भविष्य की तैयारी के तौर पर देखा जा रहा है।

पिछले दिनों ही आरबीआई ने कंपनियों की तरफ से गठित वैकल्पिक निवेश फंड (एआईएफ) में बैंकों व गैर बैंकिंग कंपनियों (एनबीएफसी) के निवेश को लेकर बेहद सख्त रवैया अख्तियार करते हुए रोक लगा दी है। और अब आरबीआई जल्द ही कनेक्टेड लेंडिंग (ऐसे व्यक्ति को कर्ज देना जो बैंकिंग कंपनी के फैसले को प्रभावित करता है) पर एक विस्तृत नियम लाने का ऐलान किया है।

जल्द लागू होगा कनेक्टेड लेंडिंग नियम

पहले चरण में इस नियम का ड्राफ्ट जारी किया जाएगा जिस पर सार्वजनिक तौर पर विमर्श होगा, फिर इसे अंतिम रूप दिया जाएगा। कनेक्टेड लेंडिंग को लेकर ये नियम भविष्य में बैंकों और उनकी तरफ से दिए जाने वाले कर्ज की पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने का काम करेगा। इसे आरबीआई की तरफ से बड़े कॉरपोरेट घरानों को बैंकिंग लाइसेंस देने या उन्हें सरकारी बैंकों की खरीद की छूट देने से पहले की तैयारी के तौर पर देखा जा रहा है।

नवंबर, 2020 में आरबीआई की तरफ से गठित एक आंतरिक समिति ने देश के बड़े कॉरपोरेट घरानों को बैंकिंग सेक्टर में उतरने की अनुमति देने की सिफारिश की थी। इसके दो ही महीने बाद आम बजट 2021-22 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने दो सरकारी बैंकों के निजीकरण की घोषणा की थी। हालांकि अभी तक ना तो आरबीआई ने अपनी आंतरिक समिति की

रिपोर्ट को स्वीकार किया और ना ही बजटीय घोषणा को अमल में लाया जा सका।

बैंकिंग उद्योग के सूत्रों का कहना है कि मौजूदा सरकार बैंक निजीकरण पर आगे बढ़ना चाहती है लेकिन बैंकों व कंपनियों के बीच के संबंधों को लेकर नियम-कानूनों को पूरी तरह से पुख्ता बनाने के बाद ही ऐसा किया जाएगा। पिछले कुछ वर्षों के दौरान पीएनबी-नीरव मोदी, पीएमसी बैंक-एचडीआईएल, यस बैंक (राणा कपूर के कार्यकाल में)-डीएचएफएल, आईसीआईसीआई बैंक (सीइओ व एमडी चंद्रा कोचर के कार्यकाल में)-वीडियोकोन जैसे कई मामले सामने आ चुके हैं।

यह तब हुआ है जब कनेक्टेड लेंडिंग को लेकर अभी भी नियम हैं। ऐसे में पहले मौजूदा नियमों को सख्त बनाने और इसको सही तरीके से लागू करने की व्यवस्था को पुख्ता बनाने की है। यह काम आरबीआई अपन नये नियमों के जरिए कर देगा।

कमजोर डॉलर की मांग से उछला रुपया, शुरुआती कारोबार में इतने पैसे चढ़कर कर रहा ट्रेड

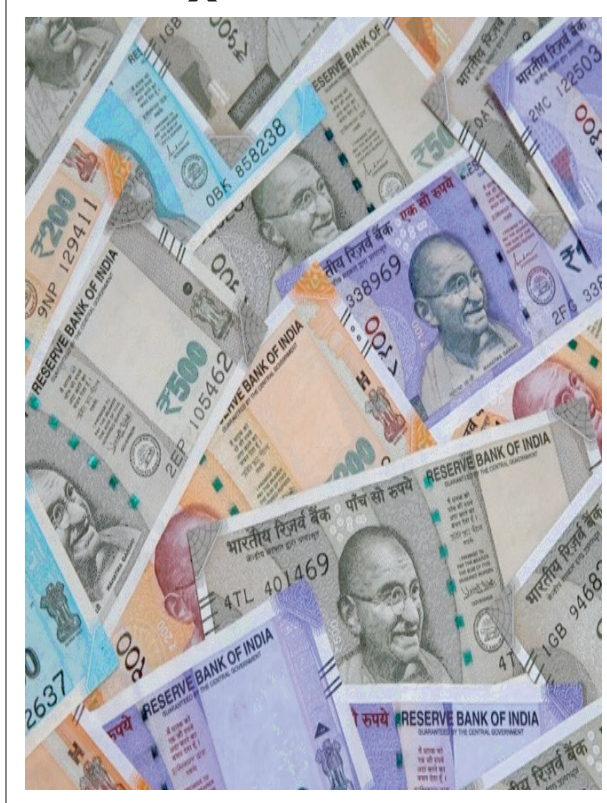

शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले रुपया 7 पैसे बढ़कर 82 .96 पर पहुंच गया। इंटरबैंक फॉरेन एक्सचेंज में आज अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 6 पैसे बढ़कर 82 .97 पर पहुंच गया। शुरुआती कारोबार में रुपया 82 .95 से 83 .02 के बीच कारोबार कर रहा था। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया अपने पिछले बंद भाव से 7 पैसे ऊपर 82 .96 पर कारोबार कर रहा था।

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय बाजार में कमजोर डॉलर और लगातार एफपीआई इनफ्लो के कारण आज शुरुआती कारोबार में रुपया डॉलर के मुकाबले 7 पैसे बढ़कर 82.96 पर पहुंच गया।

इंटरबैंक फॉरेन एक्सचेंज में आज डॉलर के मुकाबले रुपया 6 पैसे बढ़कर 82.97 पर खुला। शुरुआती कारोबार में रुपया 82.95 से 83.02 के बीच ट्रेड कर रहा था। रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 82.96 पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद के मुकाबले 7 पैसे की बढ़त है। वहीं शुक्रवार को रुपया 83.03 पर बंद हुआ था।

कमजोर हुआ डॉलर इंडेक्स

डॉलर की ताकत का अनुमान 6 अन्य करेंसी से करने वाला डॉलर इंडेक्स 0.08 प्रतिशत कम होकर 102.10 पर कारोबार कर रहा था। इसके अलावा वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा 0.41 प्रतिशत बढ़कर 76.86 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया था।

एक्सचेंज डेटा के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) ने शुक्रवार को बाजार से 9,239.42 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे थे। विदेशी निवेशकों ने 2023 में लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया है। विशेषज्ञों की माने तो अगले साल यानी सकारात्मक रुझान 2024 में भी जारी रह सकता है।

आज कैसा परफॉर्म कर रहा है बाजार?

सोमवार को शेयर बाजार की शुरुआत लाल निशान पर हुई। हालांकि अब खबर लिखे जाने तक बाजार हरे निशान पर ट्रेड कर रहा है। सेंसेक्स 7 अंक चढ़कर 71,491 पर और निफ्टी 8 अंक चढ़कर 21,465 पर कारोबार कर रहा है।

पैसों को लेकर कौन-सी गलतियां करते हैं आप, 'डंकी' फिल्म से लेना चाहिए सबक

परिवहन विशेष न्यूज

सिनेमाघरों में Dunki मूवी का बोल-बाला है। फिल्म इंडस्ट्री के बादशाह कहलाने वाले Shah Rukh Khan की इस मूवी ने जहां एक ओर अपनी कहानी को लेकर तारीफ इकट्ठी की है। इसी के साथ यह हमें कुछ फाइनेंशियल गाइडेंस भी देता है। आज इस आर्टिकल में हम आपको डंकी फिल्म में सिखाए कुछ वित्तीय सबक के बारे में बताएंगे।

नई दिल्ली। भारत के साथ दुनिया में भी शाहरुख खान के कई फैंस है। शाहरुख खान की मूवी का पूरे देश के साथ दुनिया के फैंस भी इंतजार करते हैं। इस हफ्ते सिनेमाघरों में शाहरुख खान (Shah Rukh Khan) की डंकी (Dunki) मूवी रिलीज हो गई है। यह फिल्म सच्ची घटना और शोध पर आधारित है। इस फिल्म में अवैध अप्रवासी और अप्रवासी परिवारों को उजागर करने वाली कहानी है।

इस फिल्म को मिली-जुली समीक्षा मिली है। इस फिल्म में 40 साल पहले अप्रवासी की स्थिति को बताया गया है। इस फिल्म में शाहरुख खान के साथ तापसी पन्नू (मनु रंधावा), विक्की कौशल (सुखी), बोमन ईरानी (इंग्लिश टीचर गुलाटी),विक्रम कोचर (बग्गू) आदि कई कलाकार ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। इस फिल्म में जहां अप्रवासी की स्थितियों के बारे में बताया गया है वहीं यह फिल्म कई फाइनेंशियल एडवाइस भी देती है।

एजुकेशन

इस फिल्म में पैसे कमाने के लिए तीन दोस्त पंजाब से इंग्लैंड जाना चाहते हैं। इसके लिए वह पहले तो अपनी और अपने परिवार की सेविंग एक वीजा एजेंट को देते हैं। यह वीजा एजेंट उन्हें सस्ते में वीजा देने का वादा करता है, लेकिन बाद में वह उनके पैसे लेकर भाग जाता है। इस पूरे स्थिति से एक सबक मिलता है कि कभी भी पैसों के लेकर किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए। आपको बता दें कि महानगरों के साथ अब गांव और शहरों में भी इस तरह के घोटाले हो रहे हैं।

इस तरह की धोखाधड़ी से संबंधित एक और कहानी इस फिल्म में बताई जाती है। लंदन में रहने के लिए इंग्लिश भाषा की जानकारी रखना जरूरी मानी जाती है। ऐसे में गुलाटी की भूमिका निभाने वाले बमन ईरानी जो कि एक अंग्रेजी टीचर होते हैं वो '90 दिनों में अंग्रेजी सीखें' स्कूल चलाते हैं। इस स्कूल में वादा करते हैं कि 90 दिन के बाद कोई भी व्यक्ति फर्राटेदार अंग्रेजी बोल सकता है। यह एक तरह का फ्रॉड है। हमें इस तरह की

धोखाधड़ी से बचना चाहिए।

वर्तमान में अंग्रेजी लर्निंग की तरह ही वजन घटाएं, 1 हफ्ते में गोरा हो जाए, हाइट बढ़ाएं जैसे कई घोटाले होते हैं। हमें इन घोटालों से बचना चाहिए। आपको इस तरह के स्कीम को लेकर प्रैक्टिकल होना चाहिए। आप खुद ही संभावना लगा लेंगे कि यह सब कितना झूठ है? आपको इस तरह के लुभावने वाले सपनों से बचना चाहिए। कई लोग इस तरह के लुभावने सपनों में फंस जाते हैं। आपको हमेशा से समझदार और चतुराई से काम करना चाहिए।

रिसर्च करें

ज्यादा कमाई के लिए कई लोग विदेश जाकर कमाना पसंद करते हैं। ऐसे में कई बार यह उनके वित्तीय हालात को और खराब कर देता है। अवैध अप्रवासियों के लिए भी यह स्थिति काफी खतरनाक होती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण डंकी फिल्म में विक्की कौशल (सुखी) का है। सुखी लंदन अपनी प्रेमिका के पास जाना चाहता है और लंदन जाने के बाद उसकी वित्तीय स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि उसे जीवनयापन के लिए छोटा-मोटा काम करना होता। अंत में वह अपनी प्रेमिका के पास पहुंचने से पहले ही मर जाता है।

दूर के डोल भले ही सुहाने लगते हैं, लेकिन कई बार सच सामने के बाद हमें पछतावा होता है। ऐसे में हमें कोई भी कदम उठाने से पहले उसके बारे में शोध अवश्य करना चाहिए। कई लोग कमाने के लिए भले ही विदेश जाते हैं पर विदेश जाने के बाद उनकी वित्तीय स्थिति और खराब हो जाती है। ऐसे में अगर आप भी विदेश जाकर जॉब करने का प्लान कर रहे हैं तो आपको पहले अपने फाइनेंशियल स्टेटस और उस देश या शहर की लाइफ स्टाइल को लेकर रिसर्च करना चाहिए।

धोखाधड़ी से सतर्कता

देश में कई तरह के ई-कॉमर्स के जरिये धोखाधड़ी हो रही है। आपको हमेशा से इस तरह की धोखाधड़ी से सतर्क रहना चाहिए। डंकी में बुग्गू के साथ इस तरह का एक फ्रॉड होता है जहां 50 फीसदी छूट मिलने का दावा किया जाता है। बाद में बग्गू के पता चलता है कि उसके साथ धोखाधड़ी हो गई है। आज कई ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर भी इस तरह की छूट कैशबैक आदि की सुविधा दी जाती है। इसके अलावा आए दिन फोन में इस तरह के लुभावने मैसेज आते हैं। हमें भूलकर भी इन अनजान लिंक पर क्लिक नहीं करना चाहिए। यह फिशिंग लिंक होते हैं, इस लिंक पर क्लिक करने के बाद आपका फोन या कंप्यूटर हैक हो जाता है और आपके बैंक अकाउंट को भी हैक कर दिया जाता है।

आपको इस तरह के झांसों से हमेशा बचना चाहिए। अगर आपके साथ कभी इस तरह का कोई घोटाला हो तो आपको तुरंत साइबर क्राइम से संपर्क करना चाहिए।

आमजन की जिंदगी को सुगम बनाने का संकल्प है विकसित भारत संकल्प यात्रा

जहाजपुर की ग्राम पंचायत लुहारियाकला व पीपलुंद में आयोजित हुए विकसित भारत संकल्प यात्रा केंप

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा। भारत सरकार के निर्देशानुसार 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के तहत सोमवार को जहाजपुर की ग्राम पंचायत पीपलुंद व लुहारियाकला ग्राम पंचायत में शिविर आयोजित किए गए।

जिला कलेक्टर टीकम चंद बोहरा ने लुहारियाकला शिविर का निरीक्षण कर बताया कि आमजन की जिंदगी को सुगम बनाने का संकल्प है, विकसित भारत संकल्प यात्रा। यह संकल्प यात्रा वंचितों के लिए जमीनी स्तर पर सामाजिक सुरक्षा चक्र सुनिश्चित कर रही है। प्रमुख योजनाओं से संबन्धित गतिविधियों क्विज, स्किट आदि में आमजन जोश एवं उत्साह के साथ भाग ले रहें हैं, नाच-गाकर खुशियाँ व्यक्त कर रहें जिससे इन शिविरों में आमजन के मध्य हर्षोल्लास का महोल बन गया है। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत जनसहभागिता के माध्यम से आमजन को भारत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूक कर घर-घर, गाँव-गाँव जाकर लाभान्वित किया जा रहा है। जिला कलेक्टर ने सुशासन दिवस पर शिविर में मोजूद लोगो से चर्चा की तथा

अधिकारियों व कर्मचारियों को आमजन तक स्थानीय भाषा में केंद्र सरकार की योजनाओं के लाभ की जानकारी पहुंचाने के निर्देश भी दिए।

इन योजनाओं में मिल रहा है लाभ

इन शिविरों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे आयुष्मान भारत – पीएमजेएवाई, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा, प्रधानमंत्री किसान सम्मान, किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी), प्रधानमंत्री पोषण अभियान, 'हर घर जल' - जल जीवन मिशन, गांवों का सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ मानचित्रण (स्वामित्व), जन धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री प्रणाम योजना, नैनो उर्वरक योजना आदि के अंतर्गत जनजागरूकता और जनसहभागिता के माध्यम से अंतिम पंक्ति के वंचित वर्ग तक लाभ पहुंचाया जा रहा है।

शिविरों में 'मेरी कहानी मेरी जुबानी' के तहत विभिन्न योजनाओं के लाभार्थी इन योजनाओं से जुड़े अपने-अपने अनुभव साझा कर रहे हैं और माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार भी व्यक्त कर रहें हैं।

इस दौरान संबंधित ग्राम पंचायतों के सरपंच, संबंधित उपखण्ड के उपखण्ड अधिकारी, विकास अधिकारी सहित अन्य संबन्धित जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी, एवं बड़ी संख्या में लाभार्थी उपस्थित रहे।

'केंद्र में सत्ता नहीं, सेवा का अवसर मिला,' मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती पर बोले पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उनकी सरकार सुशासन के सिद्धांत का पालन करती है। उनकी सरकार को केंद्र में सत्ता नहीं बल्कि सेवा करने का अवसर मिला है। वह यह सोचकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं कि उन्हें पंडित मदन मोहन मालवीय की तरह ही काशी की सेवा करने का अवसर मिला है। पीएम ने कहा कि देश महान हस्तियों का ऋणी है।

दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उनकी सरकार सुशासन के सिद्धांत का पालन करती है। उनकी सरकार को केंद्र में सत्ता नहीं बल्कि सेवा करने का अवसर मिला है। वह यह सोचकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं कि उन्हें पंडित मदन मोहन मालवीय की तरह ही काशी की सेवा करने का अवसर मिला है।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती पर एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने उनकी संकलित रचनाओं के 11 खंडों की प्रथम श्रृंखला का विमोचन कर कहा कि उनकी सरकार राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध कुछ संस्थानों की स्थापना कर रही है जैसे बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (बीएचयू) के संस्थापक महामना के लिए 'पहले राष्ट्र' सर्वोपरि था।

देश महान हस्तियों का ऋणी है- पीएम

पीएम ने कहा कि देश उन महान हस्तियों का ऋणी है जिन्होंने राष्ट्र के लिए अमूल्य योगदान दिया है। वह मालवीय के काम को जारी करके बहुत अभिभूत महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मालवीय जी ने कई संस्थानों को देश को समर्पित किया है जो राष्ट्र निर्माण में जुटे हुए हैं। हमें आज यह देखकर गर्व होता है कि एक बार फिर भारत ऐसे राष्ट्र निर्माण वाले संस्थानों का गठन करने लगा है। हमने उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देकर एक नई शुरुआत की है।

सरकार ने मालवीय को भारत रत्न से सम्मानित किया

उन्होंने कहा कि आज का दिन उन लोगों के लिए प्रेरणा का उत्सव है जो भारत और भारतीयता में विश्वास करते हैं। मोदी ने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि हमारी सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया है। महामना इसलिए भी खास हैं क्योंकि उनकी तरह ही मुझे भी काशी की सेवा करने का अवसर मिला है।

पीएम विश्वकर्मा योजना में अब 3 लाख तक बिना गारंटी जरूरतमंद को लोन उपलब्ध होगा

पीएम विश्वकर्मा योजना में 18 प्रकार के कारीगरों, शिल्पकारों को योजना का लाभ दिलाने के लिए भाजपा ओबीसी मोर्चा पूरा तैयार

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। भाजपा ओबीसी मोर्चा भीलवाड़ा के तत्वाधान 18 प्रकार के पारंपरिक कारीगरों, शिल्पकारों को पीएम विश्वकर्मा योजना का लाभ दिलाने के लिए भाजपा संगठन पूरी तरह से तैयार है भाजपा जिला अध्यक्ष एवं योजना के कोऑर्डिनेटर प्रशांत मेवाड़ा एवं ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष व योजना के कोऑर्डिनेटर राजेश सैन पंचायत स्तर पर सरपंचों के माध्यम से इन 18 प्रकार के कारीगरों शिल्पकारों का रजिस्ट्रेशन करवाकर इसे नगर परिषद के कमिश्नर से वेरीफाई कर राज्य सरकार को भेजकर अधिकतम लोगों का रजिस्ट्रेशन करा कर सरकार की योजनाओ का जरूरतमंद को लाभ दिलाया जाएगा

क्या है पीएम विश्वकर्म योजना

इस योजना के तहत नए भारत में विश्वकर्मा के हुनर को इसके हकदार को पूरा सम्मान मिलेगा, इस योजना के तहत 3 लाख तक बिना गारंटी ऋण उपलब्ध किया जाता है एवं 15000 तक की टूलकिट दी जाती है स्किल अपग्रेडेशन के लिए ट्रेनिंग और ₹500 प्रतिदिन स्टाइफन्ड दिया जाता है

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया कि योजना का लाभ गांव से शहर की ओर रुख कर कर लोगों को सीधा जोड़ा जाएगा विकसित भारत संकल्प यात्रा के तत्वाधान विशेष कर वंचित समाज बागरीया, गाडोलिया लौहार, फुल माला बनाने वाले, चटाई व बास के आइटम बनाने वाले, ताला बनाने वाले को योजना से जोड़कर उन्हें अवेयर कर विशेष तौर पर ओबीसी मोर्चा मोहल्ले मोहल्ले जाकर इनके रजिस्ट्रेशन करवा कर इनको पीएम विश्वकर्मा योजना का सीधा लाभ दिलाने मैं मदद करेगी आगामी दिनों जिले भर में जिला उद्योग केंद्र एवं भाजपा ओबीसी मोर्चा अलग-अलग स्थानो पर शिविर लगाकर योजना के बारे में लोगों को जागरूक करेगी

पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत सुथार, नाव निर्माता अस्तृकार ,लोहे के काम करने वाले ,टोकरी, चटाई झाड़ू बनाने वाले, बुनकर, खिलौने बनाने वाले, सुनार, कुम्हार, जूते बनाने वाले, हथोड़ा व टूलकिट निर्माता, ताला बनाने वाले, मूर्तिकार, राजमिस्त्री, बाल काटने वाले ,धोबी, दरजी ,मछली पकड़ने का जाल बनाने वाले आदि कोई इस योजना से सीधा जोड़ा है जिसमें भारत सरकार द्वारा 3 लाख का रन बिना गारंटी दिया जाएगा।

शंखगढ़ को तोड़ने की बीजेपी और कांग्रेस की रणनीति!

मनोरंजन सासमल , ओड़िशा

भुबनेश्वर : दोनों राष्ट्रीय पार्टियों बीजेपी और कांग्रेस की खास रणनीति 2024 के आम चुनाव में सत्तारूढ़ बिजेड़ी के गढ़ को तोड़ना है. दोनों पार्टियों के नेता केंद्रीय नेतृत्व से मिलने दिल्ली गए और बिजेड़ी से निपटने के मंत्र लेकर लौटे.

इस तरह पार्टी नेता करोड़ों घरों में जाकर मोदी सरकार की सफलता बताएंगे. कांग्रेस का लक्ष्य संगठनात्मक बदलाव कर नए चेहरे के साथ पार्टी को और अधिक सक्रिय बनाने का है।

हाल ही में बीजेपी विधायकों ने दिल्ली जाकर वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की थी. वहां से लौटने के बाद प्रदेश बीजेपी खेमा काफी उत्साहित है. पार्टी का लक्ष्य हर बूथ से 50 फीसदी से ज्यादा वोट हासिल करना है. इससे प्रदेश भाजपा के करोड़ों परिवारों तक पहुंच बनेगी।

आम चुनाव में 4 महीने बचे हैं, पार्टी विधायक दिल्ली चले गए हैं और केंद्रीय नेतृत्व से मंत्र लेकर लौटे हैं। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा, ओडिशा में प्रधानमंत्री मोदी की विश्वसनीयता 80 फीसदी से ज्यादा है. उनकी कार्यशैली का असर निश्चित तौर पर राज्य के मतदाताओं पर पड़ेगा. 50 फीसदी वोट का लक्ष्य हासिल करने के लिए पार्टी नेता और कार्यकर्ता बूथ और वार्ड स्तर पर घर-घर जाएंगे.विधायकों को 4,000 से 5,000 घरों और सांसदों को 4,000 से 5,000 घरों में जाकर प्रधानमंत्री मोदी का संदेश पहुंचाने का निर्देश दिया गया है. विपक्षी दल के नेता जयनारायण मिश्र ने दिल्ली से जानकारी दी है कि बीजेपी मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की तरह ओडिशा में भी मोदी की गारंटी रणनीति लागू करेगी.

उधर, प्रदेश कांग्रेस के नेता भी दिल्ली में आलाकमान से मिले और गुरुमंत्र लेकर लौटे. इसी तरह चेला कुमार की जगह पूर्व आईपीएस अधिकारी और झारखंड नेता डॉ. अजय कुमार को ओडिशा का प्रभार सौंपा गया है. 24वें चुनाव के लिए पार्टी नेता घर-घर जाकर मतदाताओं से मुलाकात कर रहे हैं. लेकिन पार्टी को किस हद तक सक्रिय होना चाहिए, यह नहीं देखा गया। ऐसे में चर्चा है कि आलाकमान ओडिशा में संगठनात्मक बदलाव कर सकता है. इसके साथ ही कहा जा रहा है कि कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए राहुल और प्रियंका गांधी जल्द ही ओडिशा आएंगे.

हालाँकि, बिजेड़ी को बीजेपी और कांग्रेस की जल्दबाजी की कोई चिंता नहीं है। सरकारी पार्टी के महासचिव प्रशांत मुदुली ने कहा, लोग बिजेड़ी के साथ हैं और पार्टी छठी बार सरकार बनाएगी।

भ्रष्टाचार से लेकर किसानों की समस्या और बेरोजगारी तक राज्य में कई मुद्दे हैं. लेकिन बीजेपी और कांग्रेस इसे प्रभावी ढंग से नहीं उठा पा रही हैं. हालांकि, राजनीतिक समीक्षकों की राय है कि दिल्ली से मंत्र लाने के बाद दोनों पार्टियों के रुख में क्या बदलाव आ रहा है और बिजेड़ी पर कौन हमला करेगा।

सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले की संसद में भी सुनाई दी थी गूंज, इन ऐतिहासिक फैसलों के कारण साल 2023 रहेगा हमेशा यादगार

नईदिल्ली। वर्ष 2023 संविधान पीठों द्वारा दिये गये कई महत्वपूर्ण फैसलों का गवाह बना। चाहे वह आर्टिकल 370 की संवैधानिक वैधता हो, विवाह समानता याचिकाएं, केंद्र की 2016 की नोटबंदी योजना को चुनौती या महाराष्ट्र और दिल्ली में राजनीतिक संकट। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ के तहत, शीर्ष अदालत ने 1 जनवरी से 15 दिसंबर, 2023 के बीच लगभग 52,191 मामलों का निपटारा करके एक नया रिकॉर्ड बनाया। हालांकि, मोदी सरकार को अनुच्छेद 370 को रद्द करने और 1000 और 500 रुपये के नोटों को बंद करने के फैसले के लिए सुप्रीम कोर्ट से जोरदार समर्थन मिला। तो आइये जान लेते है सुप्रीम कोर्ट के वो अहम फैसले जिस पर सभी देशवासियों की रहीं निगाहें। इस साल का सबसे अहम फैसला सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 370 को लेकर लिया। केंद्र ने आर्टिकल 370 को हटाने पर कानूनी लड़ाई जीत ली, पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से इसके प्रावधानों को निरस्त करने के अपने फैसले को बरकरार रखा। हालांकि, शीर्ष अदालत ने वर्तमान केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के लिए 'जल्द से जल्द' राज्य का दर्जा बहाल करने और 30 सितंबर, 2024 तक राज्य विधानसभा चुनाव कराने का आदेश दिया हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 14 मार्च को केंद्र सरकार को झटका देते हुए, भोपाल गैस त्रासदी के पीड़ितों को यूनियन कार्बाइड कंपनी से 7400 करोड़ के अतिरिक्त मुआवजे दिलाने वाली क्यूरेटिव याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने भोपाल गैस त्रासदी पीड़ितों के मुआवजे में हुई बड़ी लापरवाही पर फटकार लगाते हुए आदेश दिया कि लंबित दावों को पूरा करने के लिए भारत सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के पास पड़े 50 करोड़ रुपये की राशि का इस्तेमाल किया जाएगा। बता दें कि 1984 की भोपाल गैस त्रासदी में 3,000 से अधिक लोग मारे गए और बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय क्षति हुई थी। अदाणी समूह से जुड़े एक मामले में, शीर्ष अदालत ने स्टॉक मूल्य में हेरफेर के आरोपों पर अदाणी-हिंडनबर्ग विवाद पर एक जनहित याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रखा। इसके लिए सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति का गठन किया है और सेबी को इस बात की जांच करने का निर्देश दिया है कि क्या सेबी के नियमों का उल्लंघन और स्टॉक की कीमतों में हेरफेर किया गया था।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर मनाया गया सुशासन दिवस

जिला कलेक्टर ने दिलाई सुशासन की शपथ

परिवहन विशेष -अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 'सुशासन दिवस' हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में समारोह पूर्वक मनाया गया।इसके साथ उपखंड एवं ग्राम पंचायत स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन भी जिलेभर में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्वर्गीय श्री वाजपेयी के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी रामेश्वर लाल बाल्दी ने स्वागत भाषण दिया। मधुबाला शर्मा ने अटल कविता पठन किया।

मंच का संचालन परमेश्वर कुमावत ने किया जिला कलेक्टर टीकम चंद बोहरा ने सुशासन दिवस का अर्थ समझाया तथा विस्तार में चर्चा करते हुए बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती 25 दिसंबर को प्रतिवर्ष सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश किया।

वर्ष 1947 में श्री वाजपेयी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के समाचार पत्रों के लिये एक पत्रकार के रूप में राष्ट्र धर्म (एक हिंदी मासिक), पांचजन्य (एक हिंदी साप्ताहिक) और दैनिक समाचार पत्रों-स्वदेश और वीर अर्जुन में काम करना शुरू किया। बाद में श्यामा प्रसाद मुखर्जी से प्रभावित होकर वाजपेयी जी वर्ष 1951 में भारतीय जनसंघ में शामिल हो गए। श्री वाजपेयी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री थे और वर्ष 1996 तथा 1999 में दो बार इस पद के लिये चुने गए थे। एक सांसद के रूप में वाजपेयी को वर्ष 1994 में सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में पंडित गोविंद बल्लभ पंत पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जो उन्हें ₹सभी सांसदों के लिये एक रोल मॉडल" के रूप में परिभाषित करता है। उन्हें वर्ष 2015 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से और वर्ष 1994 में दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। उन्होंने कहा कि अटलजी ने अपने राजनीतिक जीवन में कई बड़े फैसले लिए और कई महत्वपूर्ण कार्य किए जिससे कि देश की दशा और दिशा दोनों बदल गई। प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने सड़कों के माध्यम से भारत को जोड़ने की योजना बनाई थी। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना लागू की, साथ ही ग्रामीण सड़क योजना के उनके फैसले ने देश के आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया। जिला कलक्टर ने कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों एवं कार्मिकों को सुशासन की शपथ व संकल्प दिलाया।

नगर पालिका अध्यक्ष रघुनंदन सोनी ने अटल जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अटलजी एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता, प्रखर राजनीतिज्ञ, निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता, सशक्त वक्ता, कवि, साहित्यकार, और बहुआयामी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे।

कार्यक्रम के उपरांत अतिरिक्त जिला कलक्टर चन्दन दुबे ने आभार व्यक्त किया। समारोह में पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष कन्हैया लाल धाकड़,

प्रधान माया जाट, राजी देवी धाकड़ नगरपरिषद उप सभापति, कन्हैयालाल लाल धाकड़ पुर्व नगरपालिका अध्यक्ष आदि जनप्रतिनिधि गण समेत एस डी एम पुनीत गेलडा, अधिशासी अधिकारी विजेश मंत्री आदि अधिकारी गण मौजूद रहे।

चुनावी रणनीति का पूरा दारोमदार अब सूबे के दिग्गजों पर नहीं छोड़ेगा कांग्रेस हाईकमान, होने जा रहा ये बड़ा परिवर्तन

हिन्दी पट्टी के तीन राज्यों की चुनावी रणनीति की बागडोर स्थानीय क्षत्रपों पर छोड़ने का बड़ा खामियाजा भुगतने के बाद कांग्रेस अब इसको लेकर सतर्क होती दिख रही है। लोकसभा चुनाव के बाद अगले साल होने वाले हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव के चुनावी प्रबंधन की रणनीति का संचालन पेशेवर विशेषज्ञों के जरिए करने का पार्टी का ताजा उठाया गया कदम इसका साफ संकेत है।

नई दिल्ली। हिन्दी पट्टी के तीन राज्यों की चुनावी रणनीति की बागडोर स्थानीय क्षत्रपों पर छोड़ने का बड़ा खामियाजा भुगतने के बाद कांग्रेस अब इसको लेकर सतर्क होती दिख रही है। लोकसभा चुनाव के बाद अगले साल होने वाले हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव के चुनावी प्रबंधन की रणनीति का संचालन पेशेवर विशेषज्ञों के जरिए करने का पार्टी का ताजा उठाया गया कदम इसका साफ संकेत है। इन दोनों सूबों के चुनाव प्रबंधन की कमान चुनावी विशेषज्ञ सुनील कानूगोलू को सौंपने के फैसले से यह भी साफ है कि चाहे राज्यों में पार्टी के क्षत्रप जितने भी दमदार हों मगर पार्टी हाईकमान चुनावी रणनीति की बागडोर पूरी तरह से उन्हें सौंपने से परहेज करेगा।

इन तीन नेताओं के भरोसे बैठी रही कांग्रेस

कांग्रेस नेतृत्व को मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे तीन बड़े राज्यों में हुई आश्चर्यजनक पराजय ने सियासी रूप से डांवाडोल कर दिया है। मध्यप्रदेश में कमलनाथ पर कांग्रेस का पूरा दारोमदार था तो राजस्थान में अशोक गहलोत ने नेतृत्व को जीत का संपूर्ण भरोसा दे रखा था। वहीं, छत्तीसगढ में भूपेश बघेल पार्टी की चुनावी नैया डूबो देंगे इसका हाईकमान को तनिक भी भान नहीं था।

हाईकमान का हस्तक्षेप तो दूर सलाह तक दरकिनार किया

इन तीनों क्षत्रपों ने चुनावी रणनीति का संचालन पूरी तरह अपने हिसाब से किया और हाईकमान का हस्तक्षेप तो दूर सलाह तक दरकिनार कर दिया। मध्यप्रदेश में चुनाव के दौरान बढ़ रही चुनौतियों और उम्मीदवारों को लेकर सुनील कानूगोलू की रिपोर्टों तक को खारिज कर हाईकमान को चुनावी हस्तक्षेप नहीं करने दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023